RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 5 अंक 10 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका

मई 2023

पेज संख्या : 36 राजसमंद

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

अस्पताल सरकारी

ईलाज प्राइवेट!

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

आज ही प्रवेश लें

गर्मी की छुट्टियों में कम्प्यूटर सीखने का सुनहरा मौका

RS-CIT

एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स

सरकारी नौकरी के लिए एक अनिवार्य योग्यता

सभी सरकारी कर्मचारियों को कोर्स करने पर
100 प्रतिशत फीस रिफंड व 675 रुपए अतिरिक्त प्रोत्साहन राशि

प्रशिक्षित फैकल्टी द्वारा प्रशिक्षण

Internet	MS Powerpoint	MS-Word	MS-Excel
ई-मेल अकाउंट खोलना	प्रजेंटेशन	बायोडेटा	बिजनेस प्लानर
ई-बुक्स पढ़ना	फोटो एलबम	निमंत्रण पत्र, प्रोजेक्ट रिपोर्ट	हफ्ते के कामो की सूची
विदेशी भाषा सीखना	सर्टिफिकेट	आई कार्ड	पॉकेटमनी प्लानिंग
टिकट बुकिंग	पोस्टर, ग्रीटिंग कार्ड	विज्ञापन/नोटिस	जमा-खर्च
यु टूयूब पर विडियो देखना	कम्पनी प्रोफाइल	लेटर पेड/ऐनवल्प	टेक्स केलकुलेटर
फोटो का ऑनलाइन स्टोरेज	बिजनेस प्रजेंटेशन	विजिटिंग कार्ड्स	फोन डेटाबेस, डाटा विश्लेषण

राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

New

RS-CIT

एक परिपूर्ण कम्पयूटर कोर्स

सनशाईन इंस्टीट्यूट

sunshininstitute9@gmail.com

ICICI बैंक के पास बस स्टेंड, केलवा मो. 7976752935, 9950084705

जयवर्द्धन

सम्पादक एवं प्रकाशक
ललिता राठौड़

निदेशक व उप सम्पादक
लक्ष्मणसिंह राठौड़

वितरण विभाग
सुधीर दवे

कार्यालय पता
C/O जयवर्द्धन न्यूज, नाकोड़ा कॉम्प्लेक्स
द्वितीय मंजिल, सौ फीट रोड, राजसमंद
मो. 96729-80901

सम्पादक, प्रकाशन एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स, हस्तिनापुर कांकरोली, जिला राजसमंद (राजस्थान) से मुद्रित

नोट : पुस्तक में प्रकाशित सामग्री में यथासंभव सावधानी बरती गई है। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित आलेख में लेखकों के अपने निजी विचार है। किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

ताजा खबरों से
अपडेट रहने के लिए
SUBSCRIBE करें
YouTube
Jaivardhan
News

सम्पादकीय

चिकित्सा का चक्रव्यूह

हर आम व खास व्यक्ति के इलाज की गारंटी को लेकर राजस्थान में भले ही राइट टू हेल्थ एक्ट लागू कर दिया और चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा जैसी बेहतर योजना लागू की, मगर लचर चिकित्सकीय तंत्र के चलते कोई सार्थकता नहीं दिख रही है। सरकारी अस्पताल में निशुल्क इलाज और जांच की उम्मीदों के साथ आने वाले मरीज इस चिकित्सा तंत्र में ऐसे उलझते है कि आखिर में सरकारी अस्पताल में आने के बाद भी बेहतर देखरेख व इलाज के लिए डॉक्टर के घर का दरवाजा खटखटाना ही पड़ता है। ऐसे में अगर मरीज डॉक्टर के घर जाता है, तो फिर मरीज को घर पर दिखाने का चार्ज देना ही पड़ता है और पर घर परामर्श लेने पर डॉक्टर बाहर की दवाइयां पर्ची पर लिखते हैं, जो मरीज को मजबूरन बाहर से ही खरीदने का एकमात्र विकल्प रहता है। ऐसे में मजबूरन डॉक्टर की महंगी फीस, महंगी दवाई और महंगी जांच का सामना करना ही पड़ता है। इस मेडिकल चक्रव्यू में मरीजों का सामना तंत्र के इतने षड़यंत्रो से होता है कि न केवल मरीज बल्कि उसके साथ सरकार की सहायता योजनाओं का भी दम निकल जाता है।

सरकारी अस्पतालों में मुफ्त जांच और इलाज महज दावों में सिमटता नजर आ रहा है। घूसखोरी के चक्रव्यूह में मरीज की मुश्किलें बढ़ती जा रही हैं। जनाना अस्पताल में बच्चों के जन्म पर मिठाई के नाम पर पैसा लिया जाता है, तो अन्य वार्डों में चाय-पानी का खर्चा के नाम पर कतिपय कार्मिक पैसे ऐंठ रहे हैं। सरकारी अस्पताल में ऑपरेशन कराने के लिए मरीज को एड़ी-चोटी का जोर लगाना पड़ता है। पहले तो मरीज को भर्ती कराने में ही परिजनों के पसीने छूटते है। इसके बाद यदि ऑपरेशन की बारी आ जाए तो परिजनों का असल इम्तिहान शुरू हो जाता है। चिकित्सक और स्टाफ सीधे मुंह बात नहीं करता। मरीजों ने बताया कि चिकित्सक मरीज के परिजन को घर बुलाकर ऑपरेशन करने का सौदा करते हैं। चिकित्सकों के पास भेंट पहुंच जाने के बाद ही मरीज का ऑपरेशन होता है। मरीजों ने आरोप लगाया कि सरकारी अस्पताल में मुफ्त इलाज के नाम पर खुली लूट हो रही है। मरीजों का महज बेड चार्ज ही बच रहा है। वह भी कई बार सफलतापूर्वक ऑपरेशन करने के नाम पर खुशी के नाम पर भेंट चढ़ जाता है।

लक्ष्मणसिंह राठौड़
वरिष्ठ पत्रकार, राजसमंद

इस अंक में खास

1. **कवर स्टोरी 1 :** सरकारी डॉक्टरों के घर पर मरीजों की कतार — पेज- 4
2. **कवर स्टोरी 2 :** मायूस बचपन — पेज - 7
3. **तीखी मिर्ची :** भ्रष्टाचारी सदैव श्रद्धास्पद — पेज- 9
4. **मन भायो राजसमंद :** पुष्टीमार्गीय द्वितीय पीठ श्री विट्ठलनाथजी — पेज- 12
5. **पुस्तक समीक्षा :** जन जन की व्यथा : अथ: श्री कोरोना कथा — पेज - 14
6. **चिंतन :** समरथ को नहीं दोष गौसाई — पेज - 16
7. **कविताएं :** आपणो प्यारो राजसमंद, महाराणा प्रताप — पेज - 17
8. **मेरा गांव मेरे लोग :** लल्लीबाई सनाढ्य — पेज - 18
9. **हालात :** बालिका शिक्षा ठीक नहीं — पेज - 20
10. **वास्तु शास्त्र :** स्पीड ब्रेकर व खड्डे लाते हैं दुर्भाग्य और अनिष्ट — पेज - 24
11. **कहानी :** धरती के बेटे — पेज - 26

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 9672980901

कवर स्टोरी

सरकारी डॉक्टरों घर पर मरीजों की कतार, उठे रहे सवाल

राजसमंद में आरके जिला अस्पताल के हाल

बेहतर व नि:शुल्क उपचार चिकित्सा सुविधा आमजन को उपलब्ध करवाने के लिए हेल्थ गारंटी एक्ट लागू कर दिया, मगर सरकारी अस्पतालों में कतिपय डॉक्टरों की मनमर्जी आमजन पर भारी पड़ रही है। राजसमंद के आरके जिला चिकित्सालय में कतिपय डॉक्टर कुछ ऐसी ही मनमर्जी चला रहे है, जिसकी वजह से जिला अस्पताल में त्वरित, नि:शुल्क व बेहतर उपचार की आस लेकर जाने वाले लोग अपने आप को ठगा सा महसूस कर रहे हैं। कतिपय डॉक्टरों ने अस्पताल में ऐसा सिस्टम सेट कर दिया है कि किसी भी व्यक्ति की अगर कोई जांच लिख दी, तो न तो उसे समय पर जांच रिपोर्ट मिलेगी और न ही वह समय पर यानि अस्पताल से छुट्टी होने से संबंधित डॉक्टर को वापस दिखा पाएगा। जांच रिपोर्ट आने में देरी के चलते मरीज को मजबूरन डॉक्टर के घर जाकर दिखाना ही पड़ता है, जहां न सिर्फ लोगों को डॉक्टर को परामर्श शुल्क देना पड़ता है, बल्कि संबंधित बीमारी के उपचार को लेकर महंगी दवाइयां बाहर मेडिकल से खरीदने से आर्थिक चपत भी लग रही है। इस गंभीर हालात से आरके जिला अस्पताल प्रशासन से लेकर प्रशासन तक भी वाकिफ है, मगर कोई गंभीर नहीं है। इसका खामियाजा आमजन को भुगतना पड़ रहा है और सरकार के गारंटी से उपचार के कानून की भी कोई सार्थकता सिद्ध नहीं हो पा रही है। **जिला अस्पताल में उपचार के लिए गए कुछ लोगों के साथ ऐसा ही बर्ताव हुआ, जिन्होंने बकायदा कुछ डॉक्टरों के वीडियो भी बनाए है, जिससे सारी पोलपट्टी खुलकर सामने आ गई।**

जिम्मेदार मौन क्यों ?

आरके जिला चिकित्सालय राजसमंद में जब कुछ डॉक्टरों की खुलेआम धांधली चल रही है, तो इसके लिए पहली बात तो जिम्मेदार कौन है और दूसरी बात यह है कि जिम्मेदार अधिकारी कोई ठोस कदम क्यों नहीं उठा रहे हैं। सवाल उठ रहे हैं कि क्या इस पूरे खेल में उनकी भी मिलीभगत है। क्योंकि इस गंभीर अनियमितता को लेकर अस्पताल प्रशासन द्वारा कोई ठोस कदम क्यों नहीं उठाया जा रहा है।

जयवर्द्धन न्यूज द्वारा लोगों की शिकायत के बार आरके जिला चिकित्सालय का विजिट किया, तो चौंकाने वाले हालात सामने आए। अल सुबह जिला अस्पताल में उपचार के लिए जाने वाले लोगों को न तो पर चिकित्सकीय परामर्श मिल पाता है और न ही डॉक्टर द्वारा लिखी जाने वाली जांच पूरी होती है और जांचें हो भी जाती है, तो उसकी रिपोर्ट उन्हें तब मिलेगी, जब अस्पताल से छुट्टी हो गई होगी और डॉक्टर ड्यूटी से घर चले गए होंगे। इससे सवाल उठ रहे हैं कि क्या यह सब कुछ जानबुझ कर किया जा रहा है। अगर नहीं तो लोगों को खून, पेशाब की जांच रिपोर्ट जल्दी या तय समय में लोगों को क्यों नहीं दी जा रही है, जबकि जिला अस्पताल से बाहर की निजी जांच लेब पर किसी भी तरह की जांच रिपोर्ट कुछ ही समय में लोगों को उपलब्ध करवा दी जाती है। ऐसे में जिला अस्पताल में खून, पेशाब, एक्सरे व सोनोग्राफी तक की निःशुल्क जांच सुविधा है, मगर जब अस्पताल समय में ही जांच रिपोर्ट नहीं मिलेगी, तो इसकी क्या सार्थकता रह जाएगी। आखिर निजी लेब पर तत्काल जांच रिपोर्ट मिल जाती है तो जिला अस्पताल की लेब से एक साथ सभी जांचों को रिलीज करने का क्या औचित्य। जैसे जैसे मरीज आ रे हैं, वैसे वैसे उन्हें जांच रिपोर्ट उपलब्ध क्यों नहीं कराई जा रही है। क्या यह आरके जिला अस्पताल प्रशासन की मनमर्जी है अथवा लोगों को अस्पताल से टरका कर फिर उसी डॉक्टर के घर मरीज बुलाने का तरीका तो नहीं ? यही यक्ष सवाल हर उस मरीज के जेहन में है, जो आरके जिला अस्पताल में उपचार के लिए आता है। इसके चलते बेहतर चिकित्सा सुविधा, सफाई व्यवस्था व उपचार के दावे की पोल खुल रही है। सवाल उठ रहे हैं कि आखिर इस तरह की मनमानी क्यों की जा रही है। क्या सरकारी अस्पताल में आने वाले मरीजों को डॉक्टर के घर बुलाने की साजिश तो नहीं और साजिश है, तो क्या इस साजिश में डॉक्टर से लेकर लेब तकनीशियन तक की मिलीभगत है।

सुबह इनडोर में डॉक्टर, फिर ऑपरेशन थिएटर में

आरके जिला चिकित्सालय में सख्त मॉनिटरिंग के अभाव में ऐसे हालात है कि सुबह आउटडोर में कुछ चिकित्सा विशेषज्ञ तय समय पर नहीं आते, हालांकि सुबह सबसे पहले इनडोर में मरीज देखने के लिए चले जाते हैं, मगर तब तक आउटडोर वार्ड में परामर्श के लिए आने वाले लोगों को काफी देर तक इंतजार करना पड़ता है। फिर लंबी कतार के चलते संबंधित चिकित्सा विशेषज्ञ के आने के बाद मरीज ठीक से डाक्टर से परामर्श भी नहीं ले पाते है। यह कोई काल्पनिक बातें नहीं है, बल्कि डॉक्टर दिखाकर लौटने वाले लोगों का कहना है।

लोग खुलेआम बोल रहे हैं कि आरके जिला अस्पताल में इलाज कराना, मतलब पूरा दिन खराब करना है। इस तरह जिला अस्पताल में लचर चिकित्सा व्यवस्था को लेकर डॉक्टर, नर्सेज से लेकर अस्पताल प्रशासन की भूमिका भी सवालों के घेरे में है। आखिर इलाज के लिए आने वाले लोगों को संतुष्ट क्यों नहीं कर पा रहे हैं। आखिर लोगों में इस तरह का आक्रोश क्यों है। जानकारी के अनुसार आरके जिला अस्पताल में घटना- दुर्घटना में घायल व फैक्चर की बात हो या दांतों के इलाज की बात हो, इसके लिए नम्बर लगवाना पड़ता है और वह नम्बर डॉक्टर द्वारा अपने स्तर पर बनाई सूची के आधार पर एक सप्ताह तक का समय भी लग सकता है। इस बीच उसे ज्यादा दर्द हो या कोई समस्या हो, तो उससे डॉक्टर को कोई मतलब नहीं है। अन्य किसी बीमार के ऑपरेशन व प्रसूता के सिजेरियन करवाने चिकित्सा विशेषज्ञों को लेकर लोगों में काफी असंतोष सामने आया। बताया गया कि घायल व फैक्चर का भी तत्काल ऑपरेशन नहीं हो सकता। सवाल उठ रहा है कि आपातकालीन मरीज का ऑपरेशन के लिए उसे सप्ताह से दस दिन बाद का समय क्यों दिया जाता है। इसको लेकर भी लोगों में आक्रोश है। इसके चलते सुबह आउटडोर में लोग आते हैं तो कुछ देर बाद डॉक्टर ऑपरेशन कक्ष में चले जाते हैं। ऐसे में मरीज आउटडोर में परामर्श भी नहीं ले जाते हैं। इसके चलते भी लोग परेशान है, मगर अस्पताल प्रशासन इस व्यवस्था में सुधार को लेकर कोई ठोस कदम नहीं उठा रहा है।

सिटी स्केन जांच की भरमार पर सवाल

अस्पताल में सिटी स्केन की सुविधा है, जो अच्छी बात है, मगर सिटी स्केन की जांच कराने का आंकड़ा भी सवाल खड़े करने वाला है। कतिपय चिकित्सक द्वारा ज्यादातर मरीजों के बेवजह जांच करवाने की बात भी सामने आई। आरोप है कि सिटी स्केन जांच एक निजी संस्था द्वारा की जाती है और जितनी जांचें होगी, उतना पैसा मिलता है। ऐसे में कतिपय डॉक्टर कमीशन के चलते कई लोगों के बेवजह जांच करवाने की बात भी सामने आई। यह मामला मीडिया में भी उजागर हो चुका है।

नेत्र रोग विशेषज्ञ ही नहीं

जिला चिकित्सालय लंबे समय से डॉक्टरों की कमी से जूझ रहा है। पिछले चार सालों से आरके अस्पताल में नेत्र रोग विशेषज्ञ का पद रिक्त होने से आंखों के मरीजों को खासी दिक्कत का सामना करना पड़ रहा है। आंखों के रोगी शहर के निजी अस्पतालए नाथद्वारा या उदयपुर जाने को मजबूर हैं।

मेडिकल ज्यूरिस्ट का पद कभी भरा ही नहीं

जिला अस्पताल में 15 साल से मेडिकल ज्यूरिस्ट नहीं है। 2021 में राजसमंद उपचुनाव में डॉक्टरों के पद भरें। लेकिन फिर एक- एक कर डॉक्टर अपने मूल स्थान पर लौट गए। यहां 55 डॉक्टरों के पद स्वीकृत हैं, पर 30 से 35 डॉक्टर ही कार्यरत है। अस्पताल का आउटडोर एक से डेढ़ हजार तक रहता है, मगर डॉक्टरों के अभाव में लोग परेशान है। चिकित्सा अधिकारी के कुल 28 पद है, जिनमें से 14 पद रिक्त है।

मायूस बचपन

आजकल हम करते बहुत कम है, लेकिन सोचते बहुत ज्यादा, चकाचौंध वाली जिंदगी को हमने आज अपना लिया है, इसी बीच हमारे घर का माहौल भी बहुत कुछ बदला बदला सा नजर आता है। यकीनन आज छोटे परिवार होने लगे हैं, एक या दो बच्चो से पूरे परिवार को पूर्ण मान लिया जाता है और यह बेहतर भी है, लेकिन इसी बीच कहीं न कहीं अपने बच्चों पर जुल्म करते भी नजर आते हैं, जो हमें नजर ही नहीं आता।

आज की शिक्षा पद्धति को देखते हुए हमें यही लगता है कि हमारे बच्चे भी टॉपर हो, बचपन तो बच्चों को पता भी नहीं चलता, आखिर यह होता क्या है? आज हम अपने बच्चों को मशीन से भी ज्यादा तेज चलाने की जुगत में रहते हैं, जब बच्चा 2 साल का होता है तो मां और पिता का बेडरूम में यही चिंतन चलता रहता है, इसे किस स्कूल में दाखिला दिलाया जाए और शुरू हो जाती है रेल की पटरियां बिछाने की कवायद।

अल सुबह सोई सी मासूम काया को जब मां उठाकर तैयार करती है, तो वह मासूम भोला भगवान सा बच्चा ना चाहते हुए भी वह सब कुछ करता है, जो उसे कहा जाता है, उसकी नींव में वह पत्थर रखे जाते हैं जो शायद उसकी इमारत को कभी भी मजबूत नहीं होने देंगे।

बच्चा जब थोड़ा सा बड़ा होता है और मां-बाप की चिंताओं की रेखा और बढ़ जाती है, उसे प्ले ग्रुप से दूसरे स्कूल में दाखिला दिलाया जाता है, बीस किलो का बच्चा और उसकी पीठ पर पंद्रह किलो स्कूल के बैग का वजन मानो ऐसा लगता है कोई मजदूर अपने बच्चों की खातिर यह वजन उठा रहा हो।

यह सब ऐसे मां-बाप करते हैं जो पढ़े लिखे और आज के हालात में उनको समाज में सभ्य कहा जाता है, इन कार्यों में वह अपने आप को बहुत ही गर्व सा महसूस करते हुए नजर आते हैं, आज के समाज में यह सब कुछ आम सा नजर आता है, बच्चे जब स्कूल से थके हारे आते हैं और फिर ट्यूशन की ओर बढ़ते कदम हमें नजर आते हैं। ट्यूशन से आकर फिर स्कूल का होमवर्क और उस पर मां और पिता की पैनी नजर, ऐसा लगता है कि किसी सजायाफ्ता कैदी पर जेलर की निगाहे टिकी हुई हो, बच्चा खेलने का वक्त भी नहीं निकाल पाता, उसे ऐसे स्कूल में दाखिला दिला दिया जाता है, जहां बच्चों को मशीन बनाया जाता है, उसकी मासूम भावनाओं के साथ सरेआम खिलवाड़ किया जाता है और यह सब खुशी खुशी अपनाया भी जाता है, इसके पीछे बच्चे का मानसिक और शारीरिक विकास रुक सा जाता है, वह हर वक्त डरा- डरा, सहमा-सहमा सा नजर आता है, उसे यह भी नहीं पता चलता कि आखिर मिट्टी होती क्या है।

जब बच्चे स्कूल से आते हैं तो मैंने उन मासूम बच्चों की आंखों में झांककर भी देखा है मुझे तो बस उन आंखों में खुशी की जगह उदासी ही नजर आई, जब बच्चा धीरे- धीरे बड़ा होने लगता है, उस पर और ज्यादा शिकंजा कसा जाता है, बहुत सारे बच्चे 95 प्रतिशत अंक आने पर भी उनके पेरेंट्स खुश होते हुए नजर नहीं आते, बल्कि उन्हें प्रताड़ित करते हुए दिखाई देते हैं। नतीजा यह होता है कि बहुत सारे बच्चे कुछ ऐसा कदम उठा लेते हैं, जिसका पछतावा मां बाप को जिंदगीभर रह जाता है, लेकिन मासूम बच्चों के एकांत में रोने और सुबकने की आवाज कभी इन मां- बाप के कानों तक नहीं पहुंच पाती, पल- पल वह जीते जी मरते हुए नजर आते हैं, उनकी खुशियों को गला घोट कर मार दिया जाता है। मासूम मन उदास सा कभी पंखे के हुक पर झुल जाता है तो कभी पोइजन पी जाता है या फिर गलत लोगों के बीच में फंसकर रहा जाता है, ये आज के समाज का वीभत्स सच है।

हो सके तो अपने बच्चों को जिंदगी का मतलब समझाइए, उन्हें मशीन मत बनाइए, हर बच्चा अपने आप में बेहतर होता है, उसमें अपना हुनर छुपा हुआ होता है, बस उसे देखने की नजर चाहिए, उसे हमेशा उसकी रुचि के अनुसार प्रेरित कीजिए। उसका हौंसला बढ़ाइए, अगर कहीं असफल भी हो जाए तो उसके कंधे पर हाथ रखकर फिर उसे उठाइए, उसके साथ एक दोस्ती का रिश्ता निभाएंगे, ऐसा नहीं कि हर बच्चा आप जो चाहते हैं, उसमें सफल हो।

दुनिया बहुत बड़ी है, लेकिन आपके बच्चे आपकी जिंदगी है, वह अनमोल है, ऐसा ना हो आप अपनी जिंदगी को ही दांव पर लगा दें और आपके पास पछतावे के सिवा और कुछ ना बचे।

कवर स्टोरी

पढ़ाई भी स्टेटस सिम्बल

आज की शिक्षा पद्धति के आयाम बदल चुके हैं, आज शिक्षा व्यवसाय की ओर अक्सर अग्रसर होती हुई हम सभी को दिखाई देती हैं। शिक्षा, शिक्षा ना होकर एक स्टेटस सिंबल हो गया है, हर व्यक्ति उसके आकर्षित आवरण को देखकर अपने बच्चों को उसी और ले जाने के लिए लालायित रहता है और इसी का फायदा शिक्षण संस्थाएं आज हर अभिभावक से उठाती हुई नजर आती है।

पहले की बनिस्पत आज हम नजर डालते हैं, तो विद्यालयों की चकाचौंध वाली बिल्डिंग के आगे बच्चों के अभिभावक नतमस्तक होते हुए उसमें प्रवेश दिलाते हैं, वहां पर होटल की तरह रिसेप्शन पर हाजिरी लगाते हैं और अपने बच्चे का एडमिशन कराने के लिए कहते हैं, तब उन्हें मीनू कार्ड की तरह स्कूल का पूरा शेड्यूल उनके हाथ में थमा दिया जाता है, जिसमें पूरे साल की फीस के अलावा स्कूल में होने वाली सारी गतिविधियों का विवरण लिखा होता है।

तभी वहां पर काम करने वाली एक एयर होस्टेस टाइप की लड़की पास आती है और कहती है सर आप क्या लेंगे चाय, कॉफी, जूस... एयर कंडीशन की ठंडी ठंडी हवा के आगे अभिभावक पूरी तरह से उस मायाजाल की गिरफ्त में आकर अपने बच्चे के भविष्य को बहुत ही बेहतर बनाने की कल्पना में खो जाते हैं, तब उन्हें उस स्कूल की भारी भरकम फीस का ख्याल उनसे कोसों दूर चला जाता है और उस आभासी दुनिया के मायाजाल में फंसकर बच्चे का एडमिशन करा देते हैं।

स्कूल के नियम कायदे कानून इतने सख्त होते हैं, जैसे किसी सूदखोर लाला से लिए गए पैसे हो, वहां पर आपसे फीस के तौर पर एडवांस चैक लिए जाते हैं और बहुत ही प्यार से कहा जाता है कि बच्चों की सारी सामग्री जैसे नोटबुक, किताब, पेंसिल, बैग, जूते, मोजे, ड्रेस आपको यहीं से लेने होंगे। वह इस फीस में शामिल नहीं है, उसका भुगतान और बस का चार्ज आपको अलग से करना पड़ेगा।

हमारे समय में ऐसा कुछ भी नहीं होता था, हम हमारी मर्जी से जहां चाहे, वहां से यह सब सामग्री खरीद सकते थे, बल्कि पुरानी पुस्तकों से भी अपना काम चला लेते थे, लेकिन वहां पर यह सब एलाऊ नहीं होता, क्योंकि उनके स्टेटस (दुकानदारी) में यह स्वीकार नहीं है।

धीरे- धीरे बच्चा स्कूल जाने लगता है, घर का माहौल भी अच्छा ही होता है, लेकिन परेशानी तब बढ़ जाती है, जब बच्चा कमजोर होने पर उस पर स्कूल प्रशासन द्वारा अतिरिक्त दबाव बनाया जाता है, अभिभावक को पेरेंट्स मीटिंग के नाम पर बुलाकर जलील किया जाता है, उनको एक अलग ही तरह से हिप्नोटाइज किया जाता है, अभिभावक को मिले दबाव को वह अपने उस बच्चे पर डालते हैं, उसे खेलने कूदने की बजाएं ट्यूशन पर डाल दिया जाता है। सुबह 7 बजे स्कूल जाने वाली नन्हीं सी जान 2.30 बजे स्कूल से आती है और 3 बजे वापस ट्यूशन पर निकल जाती है। आखिर वह अपने किस गुनाह की सजा पा रही है और वो भी अपने माता- पिता के द्वारा यह एक सोचनीय बिंदु है।

धीरे- धीरे वक्त बीतता है और स्कूल में कुछ और गतिविधियां चलने लगती हैं, स्पोर्ट्स के लिए अलग से ड्रेस के लिए डायरी में लिख दिया जाता है। अब अभिभावक अपने आपको ठगा सा महसूस करने लगता हैं, लेकिन वह किसी से कुछ नहीं कह पाता, क्योंकि परिवार और समाज में उन्होंने एक बड़े और नामी स्कूल में अपने बच्चों को पढ़ाकर अपने स्टेटस और रुतबे को जो बढ़ाया था, उसका भुगतान तो उनको करना ही है, पैसे ना होते हुए भी मां बाप अपने बच्चों के लिए कुछ ना कुछ जुगाड़ करके स्कूल के द्वारा मांगे गए रुपए का बंदोबस्त करता रहता है।

सिलसिला यहीं नहीं रुकता, थोड़े- थोड़े समय में क्लास टेस्ट के नाम पर फीस में अतिरिक्त फीस को जोड़कर बिल बनाया जाता है, स्कूल में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बच्चों को भाग लेना अनिवार्य रखा जाता है और उसमें ड्रेस का खर्चा भी पेरेंट्स से ही लिया जाता है। अंत में एग्जाम हो जाते हैं और रिजल्ट की घोषणा होती है, तब अभिभावक को कहा जाता है कि जो 2 महीने की छुट्टी है, उसका भी आपको भुगतान करना पड़ेगा, नहीं तो आपके बच्चे का रिजल्ट हम नहीं दे पाएंगे। कुछ अभिभावक इसका विरोध करते हैं, लेकिन बहुत सारे पेरेंट्स भीतर ही भीतर अपने आपको इस स्टेटस वाली लाइफ को मेंटेन करने के लिए पिसते जाते हैं और यह सिलसिला चलता रहता है, चलता रहता है।

राहुल दीक्षित RD
काव्य गोष्ठी मंच
काकरोली

तीखी मिर्ची

विजय शर्मा
94142-39648

भ्रष्टाचारी सदैव श्रद्धास्पद

जीवन में अगर सफल होना चाहते हैं तो रिश्वत लेना सीख लीजिए। यह परमात्मा की भक्ति की तरह है या यूं कहिए कि रिश्वत ही संसार के परमात्मा है। परमात्मा पारलौकिक आनंद के लिए आवश्यक है। वैसे ही भ्रष्टाचार लौकिक आनंद के लिए आवश्यक है। वर्तमान में जीवन की सफलता भ्रष्टाचार करने की क्षमता के आधार पर ही तय है। जो जितना बड़ा भष्टाचारी होता हैं, उसकी इज्जत, शोहरत उसी अनुपात में बढ़ती है। बड़े राजनेता, सभी सरकारी, गैर सरकारी अफसर या डॉक्टर सभी पेशे में भ्रष्टाचार के अनुकूल अवसर विद्यमान होते हैं। मगर सभी लोग इतने सौभाग्यशाली नहीं होते हैं, जो इसके सुख को प्राप्त कर जीवन को आनंदित कर पाते हैं। बहुत से अभागे भी होते हैं, जो सौभाग्य से मिले भष्टाचार के अनुकूल अवसर को गवा कर जीवन में दुर्गति को प्राप्त होते हैं। इनकी कार्य स्थल, समाज और यहां तक की घर में भी इज्जत नहीं होती हैं। इनकी पीठ पीछे कार्य स्थल पर इन्हें सनकी, घमण्डी और खुसड़ जैसे नामों से अलंकृत किया जाता है। सादगीपूर्ण जीवन जीने और भौतिक सुखों की कमी के कारण इन्हें घर में भी अपमानित होना पड़ता है। इनके बच्चे महंगे मोबाइल के अभाव में अपने पिता को हेय दृष्टि से देखते है। समाज में भी चन्दे की न्यून राशि अर्पित कर ये कंजूस और मक्खीचूस नाम से पहचाने जाते हैं। भ्रष्टाचार नहीं कर पाने वाले लोग धरती पर बोझ की तरह है। ऐसे कर्मचारी को इस पाप के भागी होकर बार बार तबादले भुगतने पड़ते हैं, मतलब दरदर की ठोकरे खानी पड़ती है। ऐसे लोगों के मित्र भी बहुत कम होते हैं। ऐसे लोग इस धरती पर अकेले आते हैं और एकाकी जीवन जीकर शून्य में विलुप्त हो जाते हैं। इनके पीछे कभी किसी चौराहे या गली के नुक्कड़ पर मूर्ति तो छोड़ो तस्वीर पर भी फूल चढ़ाने वाले नहीं मिलते हैं।

एक भ्रष्टाचारी से बढ़कर दानी और परोपकारी भी दूसरा कोई नहीं हो सकता है। ये लोग ही अपेक्षाकृत अधिक राशि अर्पित कर जन सामान्य के बीच परोपकारी का तमगा खुद हथियाते हैं। एक भ्रष्टाचारी ही उच्च कोटि का मिलनसार और व्यवहार कुशल होता है। इनके घर पर आने जाने वालो का तांता लगा रहता है। घर पर इनकी टेबल पर काजू बादाम का नाश्ता सदैव तैयार मिलता है। इनसे बढ़कर कर्तव्यनिष्ठ भी दूसरे नहीं हो सकते हैं। ये समुचित सुविधा शुल्क से प्रेरित होकर ऑफिस का आधा कार्य घर पर ही निपटाते हैं। लोगों का कार्य निपटाने के प्रति इनकी लगन और कर्तव्य निष्ठता इस बात से भी सिद्ध होती है कि जहां एक तरफ कर्मचारी नियत ऑफिस समय में भी काम नहीं करते हैं, वहीं ये महानुभाव कभी कभी रात के घने अंधेरे में भी लोगों की फाइल देखने ऑफिस पहुंच जाते हैं। ईमानदारी का गुण भी इनमें कुट कुटकर भरा होता हैं। चपरासी से लगा कर उच्च अधिकारियों तक रिश्वत की राशि का समुचित बंटवारा इनके इस गुण की गवाही देता हैं।

साहस के मामले में भी इनकी कोई सानी नहीं है। सरकार के भ्रष्टाचार निरोधक विभाग और तमाम डर के बावजूद ये भ्रष्टाचार के कार्य में कभी पीछे नहीं हटते हैं। भगवान शिव ने कभी इस सृष्टि के विष का पान किया था। मगर वर्तमान में सिर्फ ये कार्य भ्रष्टाचारियों ने किया है, गली में घुमता सुअर जिस प्रकार गली की गंदगी साफ करता हैं, यही वे महापुरुष हैं, जो संसार की समस्त पाप की काली कमाई को डकार कर धरती के भार को कम करते हैं।

रिश्वत नहीं लेकर ईमानदारी दिखाने वाले लोग तो बड़े स्वार्थी होते हैं। वे आत्म कल्याण कर स्वर्ग जाने पर आमादा होते हैं, उन्हें अपने परिवार और रिश्तेदारों के भौतिक सुखों की चिन्ता नहीं होती हैं। मगर वहीं भ्रष्टाचारी खुद की परवाह किए बगैर अपनी आने वाली सात पुस्तो के लिए दधीचि बनकर जीवन हवन कर देता हैं। इसलिए भ्रष्टाचारी सभी के लिए सदैव श्रद्धास्पद है।

औपचारिक शिक्षा के समानान्तर भी बहुत कुछ है सीखने को

वैदिक युग से लेकर आज तक की शिक्षा व्यवस्था के संबंध में यदि कुछ शब्दों में इस यात्रा का सारांश खोजा जाए, तो वह होगा, हमारा सीखने समझने वाला केन्द्र हमारा लाभार्थी विद्यार्थी, जिसके भाव धरातल तक वस्तुतः हमें उतरना था, लेकिन संभवतः हम उसे स्पर्श तक नहीं कर पाए। हम सूचना संप्रेषण तक येन केन प्रकारेण पहुंचकर अपने शैक्षिक और सामाजिक कर्तव्य की इतिश्री समझ बैठे। आज जब नए विश्व, नए परिदृश्य के बीच मनुष्य के अस्तित्व और अहमियत को जानने की प्रश्न मुद्रा में हैं तो शिक्षा, बोध, कौशल और इन सबके सामाजिक उपयोग से हम ज्ञान के इतने बड़े नेटवर्क को न जोड़ पाने के दंश से पीड़ित पा रहे हैं स्वयं को। कोशिश कर रहे हैं, लेकिन परिणाम पर कहां तक पहुंचे, विचारणीय है।

समानान्तर प्रयासों की दिशा में शिक्षा का अपेक्षित स्वरूप क्या हो, यह सोचे और गुने बगैर प्रयास और परिणाम के समन्वय का सोच बनना मुश्किल है। हमारी समस्या यह है कि नैतिक शिक्षा के राग अलापते रहने के बावजूद अब तक हम शिक्षण का कोई स्थायी माड्यूल नहीं दे पाए। परीक्षा में भाव, संवेदन और मानवीय मूल्यों के समाधानमूलक उत्तर आज भी विद्यार्थी दे रहा है, लेकिन हमें चाहिए, से आगे जाकर हमने पा लिया... की निष्पत्ति कर भावात्मक शिक्षा के असली स्वाद को विद्यार्थियों तक हम कितना पहुंचा पाए, इस दिशा में प्रयास आज भी अपेक्षित हैं।

जयवर्द्धन NEWS

राजसमंद जिले की ताजा खबरों के लिए देखिए

YouTube Channel Jaivardhan News

शिक्षा से जुड़े विद्वत्जन की समस्या यह भी है कि वे विद्यार्थियों को अवदान के रूप में वह जीवनशैली नहीं दे पाए, जो किसी भी औपचारिक, अनौपचारिक ज्ञान तंत्र का अभीष्ट होना चाहिए। सुविधाकारी आर्थिक तंत्र की मजबूती या सुरक्षित भविष्य के लिए एक अदद नौकरी, व्यवसाय से अर्जित जीवन हमारी अपनी उपज नहीं है। वह तो दिया हुआ है, स्वानुभव और विवेक से अर्जित... कहां है ? इसीलिए ज्ञान प्राप्ति के बाद हमें मौलिक और मूल्याधारित जीवन जीने की कला नहीं आ पाई। यह वह अभाव है, जिसकी परिपूर्ति के लिए बहुत कुछ किया जाना अब भी शेष है।

अपेक्षा यह भी की थी, हमने कि शिक्षा पाने के बाद हमारा विद्यार्थी सृजनधर्मी बनेगा। वह समाज के लिये एक वस्तुनिष्ठ वैज्ञानिक सोच सम्पन्न जीवन को गढ़ने का कौशल अर्जित कर पाएगा। सृजन वस्तु का नहीं, उर्वर मस्तिष्क का, सरल सर्वतोन्मुखी संवेदनशीलता का जो समस्त उन समस्याओं के समाधान की राह खोज सकें, जो वैश्विक से लेकर स्थानीय स्तर तक गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा और वैचारिक हिंसा के रूप में आज मुंह बाए हमारे समक्ष खड़ी है। सर्वतोन्मुख संवेदनशीलता का रास्ता ही संतुलित व्यक्तित्व निर्माण की ओर हमें ले जाता है। इस अपेक्षित से आज भी हम बहुत दूर हैं। व्यावहारिकता सैद्धांतिक होने का प्रतिलोम नहीं है, वह एक दूसरे पर अंतर्निर्भरता की अपेक्षा रखता है। काश इस समन्वित प्रयोजन से हम आज की शिक्षा को जोड़ चुके होते। हमारी ज्ञानोपरांत तमाम असफलताओं के मूल में इस अंतर्निर्भरता के अभाव का दंश आज भी हमें जीने नहीं देता।

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 9672980901

हमारा तमाम पाठ्यक्रम, शिक्षण और मूल्यांकन विधान, जिस बड़ी कमी से गुजरने को अभिशप्त है, वह है प्रारंभिक से लेकर युवावस्था पर्यंत तक की शिक्षा प्रणालिकाओं में वय और संप्राप्ति के धरातल पर मनोविज्ञान की समझ से परे जाकर वह सब विद्यार्थी के दिमाग में भर देना, जिसे झेलने की सामर्थ्य नहीं है उसमें। परिणाम सब कुछ पढ़कर भी वह खाली का खाली रह जाता है। क्या हम विद्यार्थी के साथ ज्ञान, सूचना और समझ देने के प्रसंग में मानवीय न्याय कर पा रहे हैं ?

शिक्षा की सफलता के दो मुख्य आधार हैं, उसका प्रकृति और संस्कृति उन्मुख होना। इन दोनों ही क्षेत्रों में अकूत खजाना भरा पड़ा है सीखने और सिखाने का। इनसे जुड़कर और सीखकर ही हम ईश्वरीय कृति के रूप में अपनी महत्ता स्थापित कर सकेंगे।

प्रयोजन, आयोजन और प्रोत्साहन ये वे तीन तत्व हैं, जिन्हें विद्यार्थियों के सीखने की प्रकृति को तेज बनाने के लिए उपयोग लाने पर पारंपरिक शिक्षण के समानांतर हम सीखने सिखाने के नए उत्स ईजाद कर पाएंगे। भावात्मक विकास, जीवन शैली, संतुलित व्यक्तित्व निर्माण, व्यावहारिक व प्रयोजन मूलक शिक्षण, सृजनात्मकता, मनोवैज्ञानिक, प्रोच, प्रकृति और संस्कृति से जुड़ाव और वैज्ञानिक सोच.इन समस्त क्षेत्रों में समानांतर प्रयास करके ही शिक्षा में अपेक्षित परिवर्तन, परिवर्द्धन और संशोधन लाया जा सकता है। किसी भी रचनाशील समाज के निरंतर विकास में सहयोगी शिक्षा के स्वरूप पर चिंतन किया जाना प्रासंगिक होगा, ऐसा विश्वास है। इति !

प्रस्तोता :

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली
मो. 9460252308

सनसाइन इंस्टीट्यूट ऑफ आईटी
www.rkcl.in
राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त
RS-CIT
CSC ACADEMY Computer Course
सरकारी नौकरी के लिए आवश्यक कम्प्यूटर कोर्स
Rajasthan Knowledge Corporation Limited
डिजिटल राजस्थान,समृद्ध राजस्थान
RS-CIT लाखों लोगों का आजमाया हुआ एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
एक परिपूर्ण कम्प्यूटर कोर्स
ICICI बैंक के पास, पुराना बस स्टैंड, केलवा, जिला राजसमंद 96498-13798, 79767-52935

पुष्टिमार्गीय द्वितीय पीठ श्री विट्ठलनाथजी

शुद्धाद्वैत दर्शनानुयायी पुष्टिमार्गीय द्वितीय पीठ के आराध्य श्री विट्ठलनाथ जी के स्वरूप की प्राप्ति काशी (चरणाट) से हुई जो एक साधु द्वारा सेवित होकर श्री वल्लभाचार्य जी तक पहुंचा। कालान्तर में यह स्वरूप श्री वल्लभाचार्य के पुत्र गुंसाई श्री विट्ठलनाथ जी को प्राप्त हुआ जिसे गुंसाई जी के द्वितीय पुत्र श्री गोविन्दजी ने प्राप्त कर वल्लभ कुल के द्वितीय पीठ के आराध्य के रूप में प्रतिष्ठित किया। श्री विट्ठलेश प्रभु चरणाट से अड़ेल होकर गोकुल और बाद में वि.सं.1718 में गोस्वामी हरिरायजी द्वारा खमनोर लाया जाकर अंततः नाथद्वारा में विराजित हुआ। वर्तमान में यह मंदिर श्रीनाथजी के मन्दिर के पार्श्व में स्थित है। यह स्वरूप स्वामिनी सहित शोभायमान है जो गौर श्याम वर्ण का है। भक्त पर्यटकों के लिए श्रीनाथजी के दर्शनों के साथ इनके दर्शन लाभ का सौभाग्य आज भी प्राप्त होता है

श्री हरिराय जी की बैठक, खमनोर

श्रीनाथजी आने वाले दर्शनार्थियों के लिए खमनोर स्थित गोस्वामी श्री हरिराय जी की बैठक का अवलोकन रोमांच का विषय हो सकता है। नाथद्वारा से मात्र पांच किलोमीटर दूर यह बैठक (स्मृति स्थल) गोस्वामी श्री हरिरायजी के मेवाड़ और वल्लभ सम्प्रदाय को किए अवदान का स्मरण दिलाती है। ब्रज से आकर यहां विराज कर श्रीनाथजी और श्री विट्ठलनाथजी के मंदिर के विकास में उनका महत्वपूर्ण सहयोग रहा जो पृथकतरू विवेचन का विवेचन है। उनके द्वारा रचित शिक्षा पत्रों को वैष्णव जगत् में शुद्धाद्वैत व पुष्टिमार्ग के शिक्षण की गंगोत्री कही जा सकती है।

श्री गोकुलचन्द्रमा जी का मन्दिर

नाथद्वारा के समीप कोठारिया गांव में लगभग साढ़े तीन सौ पुराने गोकुलचन्द्रमा जी के मंदिर के बारे में मान्यता है कि मेवाड़ के सभी तीर्थों के दर्शन के बाद तीर्थ यात्रा का माहात्म्य तब पूरा होता है जब गोकुलचन्द्रमा जी के दर्शन हो जाते हैं। यह विग्रह पूर्व कांकरोली द्वारकाधीश मन्दिर में सेवित था। गोकुलचन्द्रमाजी का यह मन्दिर पुष्टिमार्गीय भक्ति का दर्शनीय केन्द्र है।

भगवान शंकर के मन्दिरों की शृंखला

राजसमंद मुख्यालय पर अथवा निकट श्री रामेश्वर महादेव, श्री गुप्तेश्वर महादेव, श्री चौमुखा महादेव के मन्दिर अपने सौरम्य और प्राचीनता के कारण जन जन के श्रद्धा के कारण हैं। एक और तीर्थ जो पाली और राजसमन्द जिलों के मध्य स्थित है, मेवाड़ के अमरनाथ के रूप में प्रसिद्ध है। माता का वध करने के बाद दुर्गम पहाड़ियों के मध्य परशुराम जी ने भगवान शंकर की घोर तपस्या की थी। यह मन्दिर उस पौराणिक आख्यान से जुड़ा हुआ है। सादड़ी (मारवाड़) और कुंभलगढ़ के फूटा देवल से होकर मंदिर पहुंचने के पर्वतीय रास्ते हैं।

देवगढ़ से मदारिया मार्ग पर आंजनेश्वर महादेव का मन्दिर अत्यधिक दर्शनीय धार्मिक व प्राकृतिक स्थल है। यह हनुमान की माता अंजना की तपोस्थली और हनुमान जी का जन्म स्थान भी माना जाता है। गुफा के अन्दर तीन फीट ऊंचा शिवलिंग भक्तजन के लिए दर्शनीय है। एक प्रकार से यहां आने पर भगवान शिव और हनुमान आराध्यों की भक्ति का लाभ मिलता है। मन्दिर के पूर्व की ओर एक नुकीली चट्टान पर निर्मित पत्थर का त्रिशूल दर्शनीय है। यहां की चट्टानों पर भगवान ब्रह्मा, दत्तात्रेय और मदारिया शासकों से संबंधित शिलालेख स्थान की प्राचीनता को प्रमाणित करते हैं। निकटस्थ एक और चट्टान पर सैंड माता का मंदिर उल्लेखनीय है। यह पहाड़ी आरावली पर्वत की उच्चतर पर्वत मालाओं में से एक है। एक प्राचीन कुंड भी दर्शनीय है। मदारिया जो समीप ही है, कुंभा के पिता मोकल का ससुराल है जो इतिहास में ख्यात है।

आमेट के पास गलवा ग्राम स्थित कावरी महादेव और चंद्रभागा नदी के समीप स्थित बेवर महादेव मेवाड़ के श्रद्धास्पद देव तीर्थों में दर्शन योग्य तीर्थ स्थल हैं।

भगवान जयसिंह श्याम मन्दिर

वि.सं. 1513 में राजा जयसिंह राठौड़ ने आमेट (राजसमन्द) में भगवान चारभुजा नाथ की पूजा प्रतिष्ठा पालीवाल ब्राह्मणों से कराई थी। इससे प्रसन्न होकर जैसाकि कहा जाता है, (जयसिंह के) श्याम इस धरा पर प्रकट हुए और इन्हें राम चौक नामक स्थान पर बिराजित किया गया। पालीवाल समाज के श्री अंबाजी पालीवाल आज से तैरह सौ वर्ष पूर्व पाटन नगरी से प्रवासित हो सघन आम के पेड़ों से आच्छादित अंबापुरी (बाद में क्र मश) आम्बेट और आमेट में आकर रहे थे और इस नगरी को कृष्ण भक्ति का केन्द्र बनाया था।

प्रस्तोता :

डॉ. राकेश तैलंग
वरिष्ठ साहित्यकार
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली
मो. 9460252308

पुस्तक समीक्षा

जन जन की व्यथा : अथः श्री कोरोना कथा

विगत तीन वर्ष संसार ने कोरोना महामारी की त्रासदी में व्यतीत किए जिसने अलग- अलग तरह से करीब- करीब हर इंसान को प्रभावित किया है। न जाने कितने ही लोग काल के ग्रास हुए, अनगिनत लोगों ने अपनों को खो दिया, कितनों के व्यवसाय प्रभावित हुए, कइयों ने अपनी नौकरी खो दी, कई बेघर हुए। उस काल का विवरण डॉ. गोपाल राजगोपाल द्वारा एक पुस्तक 'अथः श्री कोरोना कथा' के रूप में प्रकाशित किया गया है। एक ही पुस्तक में कोरोना पर कविता, दोहे, कुंडलिया, लघुकथाएं, राजस्थानी- मेवाड़ी कहानियां और गीतों का संग्रह लेखक की बहुमुखी प्रतिभा सिद्ध करने में सक्षम है।

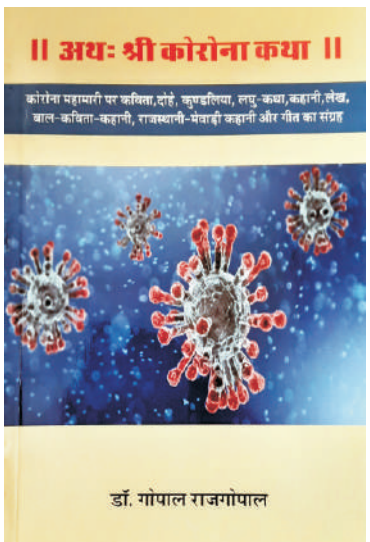

पुस्तक के प्रथम भाग में कोरोना पर आधारित दोहे लिखे गए हैं, जिनमें उक्त बीमारी से सम्बंधित सभी पहलुओं का चित्रण है। दोहों में बड़े प्रभावी तरीके से कोरोना के लक्षण, इलाज और बचाव के बारे में काव्यात्मक रूप में लिखा गया है। कई स्थानों पर कोरोना से उत्पन्न तात्कालिक परिस्थितियों को काफी अनूठे तरीके से प्रस्तुत किया है। इतनी विकट परिस्थिति के विवरण में भी एक संतुलित हास्य का प्रयोग पाठक के लिए पुस्तक को रोचक बना देता है। जैसे सुरक्षा उपायों की तुलना जेड सुरक्षा से एवं चोरों ने कहा कि हम नकदी और सोने पर हाथ साफ़ करते हैं, बरबस होठों पर मुस्कान ला देता है।

है हर इक इंसान के हाथों में हथियार,
जेड सुरक्षा की हुई, कुदरत को दरकार,
सेनिटाइज़र से कहा- चोरों ने कर माफ,
करते नकदी स्वर्ण पर, हम हाथों को साफ़।

कोरोना के लक्षण और बचाव के साथ साथ दोहों में ऑक्सीजन की कमी का वर्णन करते समय पेड़ों के महत्त्व पर एक सामाजिक सन्देश भी दिया गया है, जो किसी भी पुस्तक की परिपूर्णता को सार्थक सिद्ध करता है।

तूने जंगल काट कर, काटी जीवन डोर।
वेंटीलेटर देख के, मत हो भाव विभोर।।
करना होगा पेड़ पर, आखिर तुम्हें यकीन।
बुझा सकेगी सांस की, कब तक प्यास मशीन।।

कोरोना की कुण्डलिया भी दर्द और व्यंग्य का मिश्रण है। एक तरफ कोरोना के भयावह हालात बताते समय उसकी तुलना एक दैत्य से की गयी है। दूसरी तरफमहिलाओं के पार्लर न जाने और प्रेमी- प्रेमिका के बीच दो गज की दूरी का वर्णन उस दर्द पर मरहम लगाता प्रतीत होता है।

कोरोना ने कर दिया, उनको घर में कैद।
मेल-जोल के हो गए, रिश्ते सब विच्छेद।।
रिश्ते सब विच्छेद, बंद अब पार्लर जाना।
आइब्रो- मेकअप, फेसियल, भूले करवाना।।
कहे राजगोपाल, स्वयं पर आता रोना।
छीन गया सौन्दर्य, अरे पापी कोरोना।।

कोरोना ने कई कुरीतियों को मिटाने का कार्य भी किया है-

कोरोना ने दी लगा, कुरीतियों पर रोक।
सदियों से ना कर सका, जिसको ये इहलोक।।
जिसको ये इहलोक, हुआ ये काम पलों में।
कीलें मृत्यु भोज के, अब ठुकी तलों में।।
कहे राजगोपाल, हुआ ये जादू टोना।
जादूगर सरकार ज्यों, अब बना कोरोना।।

कविता हां मैं वही चिकित्सक हूं... एक सत्य घटना का काव्य रूप है। दिनांक 19 अप्रेल 2020 को चेन्नई के एक न्यूरो सर्जन डॉ. साइमन हर्कुलस के कोरोना से निधन होने पर जन समुदाय द्वारा उनके पार्थिव शरीर का अनादर किया गया था। इस घटना को सांकेतिक रूप में प्रयोग कर डॉ. राजगोपाल ने उस समय में चिकित्सकों की व्यथा का अत्यंत मार्मिक वर्णन किया है, जो बरबस ही आंखें भीगो देता है। वहीं दूसरी तरफ बाल कविताएं- तूने क्या समझा कोरोना..., कोरोना को दूर भगाएं... और कोरोना से पाओ पार... सरल भाषा में बच्चों के लिए लिखी गयी हैं, जो बच्चों द्वारा आसानी से समझी जा सकती है।

पुस्तक में दो बाल कहानियां भी हैं, जो बच्चों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। बाल कहानी 'अहिंसा के मार्ग पर वनराज' बच्चों में कोरोना के प्रति जागरूकता जगाती है। सरल शब्दों में जानवरों में कोरोना के बचाव के उपायों के साथ साथ शेर को शिकार न कर शाकाहारी बनने का सुझाव देकर बच्चों को अहिंसा के मार्ग पर चलने

की शिक्षा भी देती है। दूसरी बाल कहानी 'जंगल में कोरोना' जानवरों में फैली कोरोना महामारी के बचाव की और इशारा करती है। चींटी और हाथी के माध्यम से कहानी का ताना बाना गूंथा गया है। चींटी एक छोटा जीव है, लेकिन उसकी सभी जानवरों को बचाने की ललक प्रशंसनीय और अनुकरणीय है। उसको उपेक्षा भी मिलती है, किन्तु वह निडर होकर अपने कार्य में अनवरत लगी रहती है। अस्पताल में भर्ती हाथी की मृत्यु के तुरंत पहले वह मिलने जाती है, तब हाथी दादा को अपराध बोध होता है, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। लघुकथाएं अत्यंत रोचक व हृदयस्पर्शी हैं। लघुकथा 'परिवर्तन' कोरोनाकाल में मानवीय स्वार्थी स्वभाव को मार्मिकता के साथ प्रस्तुत करती है। 'मजबूरी' लघुकथा में चिकित्सक की मजबूरी का वर्णन है। रोगी चिकित्सक से मृत्यु मांगता है, लेकिन वह असहाय होता है। वहीं लघुकथा 'सेनिटाइजर' सार्वजनिक स्थानों पर पुरुषों द्वारा महिलाओं के उत्पीड़न पर कटाक्ष है।

पुस्तक में प्रकाशित सभी कहानियां कोरोना के अलग अलग पहलुओं पर है, किन्तु विषय एक ही है। 'साहब का मास्क' कहानी में हमारे सरकारी तंत्र पर मास्क के माध्यम से व्यंग्य किया गया है, जो आज की ऑफिस व्यवस्था पर मनोरंजक तरीके से कटाक्ष है। कहानी 'तोलाराम का जीव' हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित कहानी 'भोलाराम का जीव' का कोरोना रूपांतरण लगती है। कहानी में समानता होते हुए भी यह एक अलग कहानी है, जिसे उसके समकक्ष रखा जा सकता है। नारदजी द्वारा कोरोनाकाल में पृथ्वी भ्रमण के माध्यम से अस्पतालों की व्यवस्था और कोरोना काल की अफरातफरी का सटीक विवरण है। बीच- बीच में हास्य का तड़का लगा होने से कहानी रुचिकर हो जाती है और पाठक की दिलचस्पी अंत तक बनी रहती है। कोरोनाकाल चिकित्सकों के लिए भी कम कष्टकारी नहीं था। कहानी 'मजबूरियां' एक चिकित्सक की व्यथा का सजीव चित्रण है। लगातार मरीजों की सेवा करते करते रोग लग जाने की आशंका, परिजनों से न मिल पाने की कसक और दिनभर मरीजों की अप्रत्याशित मृत्यु के साक्षात्कार की छटपटाहट के चलते वह समय चिकित्सकों के लिए कितना बेचैनी भरा था। इसका दर्द यह कहानी स्पष्ट रूप से महसूस कराती है।

लेख 'मौसम है मास्कियाना' भी हास्य व्यंग्य से भरपूर है, जिसमें बताया गया है कि कोरोना के पूर्व भी युवतियां अन्य उद्देश्यों के लिए मास्क लगाती रही हैं। इस लेख में मास्क द्वारा कोरोना बचाव के इतर भी कई फायदे गिनवाए गए हैं।

पुस्तक में दो कहानियां राजस्थानी, मेवाड़ी भाषा में भी हैं, जो मेवाड़ी भाषा के जानकारों को बहुत ही गुदगुदाएंगी। एक कहानी में पत्नी को कोरोना बचाव के दो तरीके अर्थात मास्क और सेनिटाइजर के उपयोग तो अच्छी तरह से समझ में आ जाते हैं, किन्तु दो गज की दूरी को लेकर वह सशंकित रहती है। अंतत: उसका पति ही शंका का समाधान करता है। दूसरी कहानी में दो प्रेमी-प्रेमिका अपने घरों से भाग उस जत्थे में शामिल हो जाते हैं, जिसके लोग पैदल ही महानगर से अपने- अपने गांव जा रहे होते हैं। चलते-चलते सभी लोग अपने गंतव्य तक पहुंच जाते हैं। आखिर में सुनसान सड़क पर दोनों प्रेमी अकेले रह जाते हैं। तब उनकी स्थिति ऐसी हो जाती है कि न घर के रहते हैं न घाट के।

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएं अत्यंत मनोरंजक, शिक्षाप्रद एवं कोई न कोई सन्देश लिए हुए है। पुस्तक आरम्भ से अंत तक पाठकों को बांधे रखने का सामर्थ्य रखती है। पुस्तक का प्रकाशन आरएनटी मेडिकल कॉलेज उदयपुर के 'रवींद्र स्पंदन' मंच द्वारा किया गया है। मुखपृष्ठ आकर्षक है जिस पर कोरोना वायरस का रंगीन चित्र है। पुस्तक का शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है, जो स्वयं ही सारी कहानी बयान कर देता है। पुस्तक रुचिकर तो है ही, संग्रहणीय भी है। शोधार्थियों के लिए यह पुस्तक सन्दर्भ ग्रन्थ का काम भी करेगी, ऐसी आशा है।

डॉ. राजगोपाल वरिष्ठ चिकित्सक तो हैं ही आपकी गिनती हिंदी साहित्य जगत के वरिष्ठ रचनाकारों में होती है। आप आरएनटी मेडिकल कॉलेज के राजभाषा संपर्क अधिकारी भी हैं। विविध विधाओं में आपकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आपने अब तक उन्नीस बार रक्तदान भी किया है। बेहतरीन ज्ञानवर्धक और मनोरंजक पुस्तक 'अथ: श्री कोरोना कथा' के लेखन और प्रकाशन के लिए आपको बहुत- बहुत साधुवाद।

सादर !

डॉ. मीना आत्रेय (MMBS, MD)
वरिष्ठ आचार्य
आरएनटी मेडिकल कॉलेज उदयपुर

समरथ को नहीं दोष गौसाईं

श्री रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास लिखते हैं- समरथ को नहीं दोष गौसाईं। अर्थात साधन सम्पन्न बलशाली प्रभावशाली का आचरण सुनिश्चित सामाजिक मर्यादाओं के विपरीत होने पर भी उसे नियम विरुद्ध आचरण का दोषी नहीं माना जाता है। यह ठीक उसी प्रकार है, जैसे सूर्य की तीव्रता कितनी भी प्रचंड हो, वर्षा काल में गंगाजी अपने तटों को छोड़कर कितने भी क्षेत्र पर अतिक्रमण कर लें और अग्नि अपनी प्रचंड ज्वाला में कुछ भी भस्म कर दें, किन्तु उसे दोषी नहीं ठहराया जाता है।

ये जो शब्द ऊपर लिखे हैं, किसी धार्मिक व्यक्ति के व्याख्यान से बिना किसी फेर बदल के लिए गए हैं। सदियां बीत गई और हम पढ़ लिख कर आधुनिक समाज का निर्माण करने के बावजूद भी उस पुरानी मानसिकता को छोड़ नहीं पाए हैं। कृष्ण बिहारी नूर कहते हैं- धन के हाथों बिके हैं सब कानून, अब किसी जुर्म की सज़ा ही नहीं। सब बिकता है और धनवान खरीद लेते हैं। नीचे से ऊपर तक कर्मचारी, अधिकारी से राजनेता तक यहां तक की इंसाफ़ भी धनवान और उच्च वर्ग को मनचाहा और जल्दी से उपलब्ध हो जाता है, जबकि सामान्य व्यक्ति ज़िंदगीभर कोर्ट, कचहरी, सरकारी दफ़्तरों के चक्कर काटता मर जाता है।

राजनेता चाहे जिस भी दल के हो, आज तक कोई कानून खुद पर अंकुश लगाने को नहीं बना पाए हैं। लाख डांट फटकार सर्वोच्च अदालत से मिलने पर भी संसद और विधानसभाओं में अपराधी, बाहुबली, गंभीर जुर्म करने वाले भी माननीय कहलाए जाने पर रोक नहीं लगाई है। अफसरशाही सब पर सख्ती से नियम लागू करती है, अपने को नियम कायदे कानून से ऊपर समझती है, उनकी कलम जब जैसी ज़रूरत, अपनी सुविधा, सहूलियत से बदल कर कानून को नर्म, मुलायम, लचीला बना लिया करती है।

यूं तो देश की व्यवस्था इतनी लचर और बदहाल हो जाने पर भी किसी शासक, प्रशासक को रत्ती भर भी चिंता नहीं है। फिर भी कभी कभी कोई शासक या प्रशासक या मंत्री विचार करता है और कुछ कानूनी बदलाव लाने की कोशिश करता है, जिससे सबको शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, रोज़गार समानता से हासिल हो सके। तब कुछ लोग जिनके स्वार्थ, जिनकी मनमानी पर अंकुश लगता है, वे तमाम तरह से साम, दाम, दंड, भेद का उपयोग कर अपने हित को साधने का कार्य कर लिया करते हैं। परहित सरिस धरम नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमाई। ये भी पंक्ति श्री रामचरितमानस से उद्धित है। ये कितनी विडंबना की बात है कि हम दावा करते हैं- मानवता और समाज देश के कल्याण का, लेकिन अपने पास बहुत होने पर भी उनके लिए जिनके पास जीवन यापन को कुछ भी नहीं, थोड़ा सा त्याग, अपने स्वार्थ का नहीं स्वीकार करते सबकी भलाई की खातिर। आज़ादी को कुछ ख़ास लोगों ने बंधक बना लिया है और आम लोगों की आज़ादी तो क्या उनके मौलिक जीने के हक तक हासिल होने नहीं देना चाहते हैं। अजीब बात हुई, शुरुआत बड़े लोगों की अनुचित बातों को भी गलत नहीं समझते, से की तो आखिर अंत में परहित सरिस धरम नहीं भाई पर पीड़ा पर होने से विषय पूरा समझ में आया, अभी तक ऊपर शीर्षक की जगह खाली थी, अब शीर्षक सही मिल गया है। समरथ को दोष नहीं दे सकते, लेकिन साथ में आखिर में कहना ज़रूरी है, समरथ लोग पर पीड़ा को नहीं समझते तो सबसे बड़ा अधर्म यही है। समरथ को नहीं दोष से लेकर पीड़ा देने से अधिक अधर्म कोई नहीं तक यही कथासार है।

चिंताजनक विषय है कि अखबार, टीवी, सिनेमा, लिखने वाले अधिकांश जनता की वास्तविकता की बात नहीं करते और इधर उधर की सरकार की, उद्योगपतियों की, नाम शोहरत वाले लोगों की, यहां तक की किसी अपराधी की व्यर्थ की बात पर भी चर्चा, विचार विमर्श कर अपनी मानसिक गुलामी और संकुचित सोच को दर्शा रहे हैं। जिनको समाज की तस्वीर दिखलानी थी, वही सामाजिक वास्तविकता से नज़र चुराते लगते हैं। किन लोगों को आदर्श समझने लगे हैं, वो जो धनपशु बन पैसे के लिए झूठ बोलते है, विज्ञापन देते हैं, जुआ खेलने जैसे कार्य को बढ़ावा देते हैं या वो जो भगवा धारण कर सब कुछ बेचते हैं, कहते हैं देश उनका परिवार है, जबकि उनकी बेची जा रही वस्तु गुणवत्ता खराब मिलती है, तो खुद उनको नहीं पता होता कि वो कहां किसने बनाई, बेची। क्योंकि अपना नाम, लेबल तमाम लोगों को बेचते हैं पैसा लेकर। जैसे सत्ताधारी दल में शामिल होने से अपराधी पाक साफ हो जाते हैं, उसी तरह।

डॉ. लोक सेतिया
एससीएफ 30, मॉडल टाउन
फतेहाबाद, हरियाणा 125050
मोबाइल - 9416792330

आपणों प्यारो राजसमंद

अठे है राजसमंद री झील,
इण रो मीठो-मीठो नीर।
नोचौकी री छतरियां देख,
अठे मण्ड्यिोड़ा शिलालेख।
पूरब में इरीगेशन री पाळ,
जठे मनख घूमे सुबह-शाम
हवा चालती रेवे मन्द-मन्द,
यो है आपणो प्यारो राजसमंद।

श्रीनाथजी को मंदिर भारी,
दुनिया श्रीजी की है आभारी।
दूर-दूर सूं आवे नर- नारी,
शिव मूर्ति की छटा है न्यारी।
प्रभु प्रसाद देवे बड़ो आनन्द,
यो है आपणो प्यारो राजसमंद।

द्वारकाधीश के ध्वजा फहरावे,
कन्हैया ने सारी नगरी ध्यावे।
साल भर रेवे उत्सव, उल्लास,
जन्माष्टमी और अन्नकूट है खास।
गणगौर सवारी सबने है पसंद
यो है आपणों प्यारो राजसमंद।

गढ़बोर चारभुजा रो मन्दर,
वण्यो देवळ गणों ही सुंदर।
जलझूलनी को मेळो भारी,
नगरी की है शोभा न्यारी,
दर्शन सूं मिटे जन्मां रो फंद,
यो है आपणों प्यारो राजसमंद।

रंग नी छोड़ें जिणरी माटी,
राणा रो शौर्य या हल्दीघाटी।
या मेवाड़ ने मान दिलावे,
वफादार चेतक री याद दिलावे।
कविवर गावे प्रताप रा छन्द,
यो है आपणों प्यारो राजसमंद।

कुंभलगढ़ किलो दिलावे मान,
राणा प्रताप को जन्म स्थान।
यो उदयसिंह ने शरण देवे,
चीन की दीवार सूं टक्कर लेवे।
अठे भ्रमण रा आवे आनन्द,
यो है आपणों प्यारो राजसमंद।

मारवाड़ री सीमा पे देवां रा देव,
बिराज्या बाबा परशुराम महादेव।
गुफा मंदिर की महिमा है भारी,
मंगरा पे प्राकृतिक छवि है न्यारी।
बंदर खावे अठे फल-फूल, कन्द,
यो है आपणों प्यारो राजसमंद।।

दिवेर में वी गणी जोर की राड़,
इने केवे थर्मोपोली ऑफ मेवाड़।
अठे चाल्या राणा रा तलवार-तीर,
बहलोल खां ने घोड़ा समेत दीदो चीर।
मुगलां ने मारवा को कीदो पूरो प्रबंध,
यो है आपणों प्यारो राजसमंद।

सांसेरा जलदेवी की महिमा मत पूछ,
अठे प्रताप काटी अकबर की मूंछ।
तळाव रा वच में बैठी मां भवानी,
पाणी सूं दिवळां चालवा की कहानी।
जलदेवी की जौत नी वेवे बन्द,
यो है आपणों प्यारो राजसमंद।

अठे है मातृकुंडिया नामक स्थान,
जठे आया हा परशुराम भगवान।
देश में घूम्या परसो कमण्ड्ल लें साथे,
मातृ हत्या को दोष हो माथे।
अठे स्नान सूं छूट्यो हों फंद
यो है आपणों प्यारो राजसमंद।

अठे है राजपुरा दरीबा री खान,
निकळे सीसा, जस्ता, चांदी जाण।
बहुमूल्य धातुआं री है भरमार,
माइंस में लोगां ने मिले रोजगार।
नौकरी में पैसा, रिटायर के आनन्द,
यो है आपणों प्यारो राजसमंद।

जेके में टायर का नी है घाटा,
अठे है तरे तरे का मार्बल भाटा।
जोई अठे पेली बार आवे,
अठिनु- वठिने चक्कर खावे।
राजनगर कांकरोली में फंस जावे,
दूर- दूर तक फैली इणरी सुगन्ध,
यो है अनुठो प्यारो राजसमंद।

रामगोपाल आचार्य
पीपली आचार्यान, राजसमंद
मो. 9929215040

महाराणा प्रताप

सिसोदिया कुल का दीपक, वह जयवंता का जाया।
हल्दीघाटी के कण कण में, जिसका शौर्य समाया।।
ज्येष्ठमास में प्रखर सूर्य सा, तृतीया को अवतीर्ण हुआ।
कुंभलगढ़ शहनाई बजी, ज्योतिपुंज प्रकीर्ण हुआ।।

बचपन से ही रण प्रवीण, लक्ष्यभेदी अचूक निशाना।
स्वाभिमान की मूरत था, वो... एकलिंग दीवाना।।
ढ़ाई गज लंबाई लगभग, सुभट सुडौल देहधारी।
शेरों से भिड़ जाता था वो, स्वाभिमान का व्रतधारी।।
गज- अश्वों ने जिसके हित, प्राणों का बलिदान किया।
भामाशाह ने निज संचय, स्वाभिमान में दान दिया।।

अकबर जिसको देख, स्वप्न में भी कंपित होता था।
चेतक सन्मुख देख, मान- गज संतुलन खोता था।।
एक ही वार में चीर दिया, अश्व सहित बहलोल खान।
भाले से प्राण बचाने को, गजहौदे में छुप गया मान।।

दुश्मन के लाखों सैनानी, जिस क्रोधानल की भेंट चढ़े।
उसके कृपाण और भाले ने, अनगिनत कीर्तिमान गढ़े।।
जिसके त्याग समर्पण का, इतिहास सुनहरा अंकित है।
प्रथम स्वतंत्रता सैनिक था, भारत मां जिस पर गर्वित है।।
भारत माँ जिस पर...

सुरेश शर्मा 'सशक्त'
राउप्रावि खातीखेड़ा, राजसमन्द

महिला सशक्तिकरण की मिसाल थी पूर्व पार्षद लल्लीबाई सनाढ्य

कांकरोली की इस पावन धरती ने कितने ही आदर्श पुरूष और आदर्श नारियों को जन्म दिया है। पूर्व में भी आप कई आदर्श और उच्च विचारों वाली नारियों के बारे में आप ''मेरा गांव मेरे लोग'' में पढ़ चुके हैं। आज हम एक ऐसी ही महिला सशक्तिकरण की मिसाल और महिला में जागृति की मशाल जलाने वाली समाजसेवी स्व. लल्ली बाई सनाढ्य के बारे में बताने जा रहे हैं।

कांकरोली के धोरा मोहल्ला में आज से लगभग 103 वर्ष पहले सन् 1920 में स्व. श्री जग्गनाथ जी सनाढ्य के घर माता श्री गोमती बाई की कोख से एक ऐसी बालिका का जन्म हुआ, जिसने अपने कुटुम्ब ही नही समाज और इस कांकरोली गांव के लोगों में समाजसेवा व मानवता की ऐसी मिसाल पेश की, जिन्हें गांव के बुजुर्ग याद कर करके स्व. लल्ली बाई को आदर के साथ याद करते हैं। अपने मोहल्ले में अपने छोटे भाई स्व. लछु लाल जी व दो बहने श्री बच्ची बाई और कंका बाई के साथ अपना बचपन खेलकूद प्रारम्भ ही किया था कि उन पर एक भारी विपदा आ पड़ी। आपके माता पिता दोनों का ही देहावसान हो गया। ऐसी छोटी उमर में माता पिता का स्वर्गवास स्व. लल्ली बाई के लिए बहुत बड़ी परीक्षा की घड़ी थी। आपने भाई बहनों में बड़ी होने के कारण घर की सारी जिम्मेदारियां आप पर आ गई थी। आपने बड़ी हिम्मत और सूझबुझ से घर को संभाला। आपने अपनी बहनों और भाई को अपने काका जो उस समय अलवर में कार्य किया करते थे। उनके पास भेज दिया। अलवर में ही बहनों और भाई का लालन पालन शिक्षा और दीक्षा हुई। इधर आपने अपने मोहल्ले की महिलाओं में कई सामाजिक उत्थान के कार्य करना जारी रखा। वे महिलाओं में एक चर्चित नारी की तरह उभर कर सामने आई। आपने नारी उत्थान के लिये एक कमेटी का भी गठन किया, जो गांव की ही महिलाओं की कठिनाईयों के निवारण किया करती थी। महिलाओं में काम काज की प्रवृतियों पर भी आपने पूरा ध्यान दिया। सिलाई कला, कसीदाकारी, घर में बनने वाले उत्पादों पर भी वे महिलाओं में जागृति पैदा किया करती थी। उन्हें हर तरह की सहायता प्रदान करना ही उनका मुख्य उद्देश्य था।

धीरे-धीरे समय के साथ साथ समय बदला और आपके भाई बहन अलवर से अपने काका के घर से पुन: कांकरोली आ गए। आपने अपने भाई और बहनों का पूरा ध्यान रखते हुए अपने संरक्षण में भाई को नौकरी व बहनों की शादी की और फिर खुद कांकरोली गांव के ही तालाब की पाल पर रहने वाले स्व. भूरालाल जी, गुलाबी बाई के सुपुत्र स्व. कन्हैया लाल जी फुलगरिया के साथ विवाह रचाया और अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ किया। एक सुसंस्कृत परिवार में आकर स्व. लल्ली बाई का जीवन और गतिशील हो गया। अब वे समाजसेवा और लोगों की सहायता करने में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने लगी। जब कांकरोली, राजनगर को मिलाकर नगरपालिका का गठन हुआ, तो वे पहली महिला पार्षद बनी। धीरे धीरे वे राजनीति में भी भाग लेने लगी। सुखाडिया और अन्य कई नेताओं से उनके घनिष्ठ संबंध बन गए थे। सुखाड़िया जी की पत्नी स्व. इन्दु बाला सुखाडिया जब राजसमंद सांसद का चुनाव लड़ी, तो राजसमंद में स्व. लल्ली बाई की प्रतिभा और नेतृत्व को देखते हुए स्व. इन्दु बाला सुखाडिया ने उन्हें अपने चुनाव प्रभार की बागडोर थमा दी। इन्होंने भी दिन रात एक कर मेहनत से चुनाव में बढ़ चढ़ कर भाग लिया और इन्दुबाला सुखाडिया को जीता कर ही दम लिया। इन्दुबाला ने भी अपनी जीत का श्रेय स्व. लल्ली बाई को ही दिया था।

अपनी घर गृहस्थी पर भी आपका पूरा ध्यान था। अपने बच्चों में अच्छे संस्कार के लिए वे सदा प्रयासरत रही। उनके दो पुत्र स्व. श्री महेशजी व रमेशजी व चार पुत्रियां रतनदेवी, सुकुन देवी, सावित्री देवी और समादेवी अपने बच्चें बच्चियों का आपने अच्छे तरीके से लालन पालन कर शिक्षा दिला शादी कर उनका घर बसाया। आप अपने उम्र के अन्तिम पड़ाव पर भी समाजसेवा से जुडी रही। वे कई तरह की घरेलू दवाईयां की जानकारीयां रखती थी। गांव के लोगों में हाथ पैर की चोट, मोच हो या मोती जरा या खसरा आदि आदि अनेकानेक बीमारियों के घरेलू नुस्खे आपके पास थे और वे बिना किसी भेदभाव या जात पात की सोच किए बिना नि:स्वार्थ रूप से सबकी सेवा सहायता किया करती थी। अपने अंतिम समय में आपको लकवा मार गया था, पर आपने अपना ईलाज खुद कर लकवे पर काफी हद तक विजय प्राप्त कर ली थी और वे द्वारकाधीश मंदिर रोज दर्शन करने जाया करती थी। लोग उनके इस बीमारी की हालत में भी हिम्मत को देख उनकी हिम्मत को दाद दिए बिना नहीं रहते थे।

और आखिर वो दिन भी आ गया, जब वे दिनांक 12 फरवरी 1988 को अपने भरे पूरे परिवार को छोड ईश्वर को प्यारी हो गई और उनके ठीक 3 माह बाद उनके पति स्व. श्री कन्हैयालालजी भी 20 जून 1988 को स्वर्ग सिधार गए। ऐसी सेवाभावी विदुशी महिला सशक्तिकरण की धनी स्व. लल्ली बाई को हार्दिक श्रद्धांजलि।

अफ़ज़ल खां अफजल
वरिष्ठ साहित्यकार,
जलचक्की, राजसमंद

पुस्तक समीक्षा

मन छुती, यादों के झरोखों में झुलाती 'है कुछ और भी' की कविताएं

जोधपुर में जन्मी कांकरोली के पड़ोसी गांव मोही के स्व. निरंजन नाथ आचार्य के सुपुत्र कर्नल देशबन्धु आचार्य को अपना जीवन साथी बना आई सुधा आचार्य बाल्यकाल से ही कविता लिखने के अपने शोक को अब तक पाले हुई है। अपने पहले कविता संग्रह 'बस ईतना ही' (सन् 1910) तब से अब तक आपने कईं कविताएं व कहानियां लिखी। जिनका कई पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशन हो चुका है। आकाशवाणी पर भी आपकी कविताएं व कहानियों का प्रसारण हुआ है। 'है कुछ और भी' कविता संग्रह में छोटी मोटी लगभग 126 कविताएं संग्रहित हैं, जिन्हें पढ़कर पाठक अतीत में खो जाता है। कभी बचपन में तो कभी मां-पिता के दुलार में तो कभी साथी सहपाठी की यादों में सीधी सपाट शैली में लिखी कविताएं मन को छूती है और यादों के झरोखों में झुलाती है। मौन कविता में सुधा जी कहती हैं –

मौन बढ़ता गया, दर्द मिटता गया
मौन का पकड़े रहा, समय साथ साथ चलता रहा।

बातें कविता में वे एक जगह कहती है-

बातें इतनी जो खत्म न हो,
गद्दे पर अधलेटी मां दादी से।

विवाह, बेटी और अपनी जमीन कविताएं अच्छी बन पड़ी है। विवाह की खुशी और अगली मंजिल बेटी का दो घरों से रिश्ता निभाना और खुश रहना एक सार्थक कथ्य है। 'नौकरी पूरी हुई और गांव आ बसे'। एक ऐसा सत्य है, जिसे इंसान को हमेशा याद रखना चाहिए। यहां सब कुछ इस कविता में सुधा जी ने समझाया है।

बेटा छोटा होकर
गोदी में आजा
तुझसे खेलने को बड़ा मन करता है।

'गोदी कविता में' सुधा जी ने मां-बाप और बेटे के मनोभावों को सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है, तो 'कैसा कंधा' कविता में सुधा जी कहती हैं-

तीसरे पर उनके बैठने क्या गए
बुराईयां सुनकर कान पक गए।

'बाबा की बेटी' कविता में लाडली बेटी का बचपन और शादी की विदाई का वर्णन सुन्दर तरीके से कविता में पिरोया गया है। 'तस्वीर' कविता में-

साथ तेरा चाहते रहे, जीने के लिए
तुम हमारी तस्वीरें संजोते रहे
बाद में याद करने के लिए

'तो कोई बात लिखुं' कविता बहुत कुछ सोचने पर मजबूर करती है-

मैं लिखुं या ना लिखुं समझ लेना
फिर तुम मुझसे प्यार कर लेना

'कमल' कविता में सुधा जी ने अपने भाव यु प्रकट किये हैं-

मैं तुमसे मिलने तब आऊंगी
जब तुम मुझ पर लिखोगी कविता

'अलगाव' कविता में वे लिखती हैं-

समुद्र की अपनी ही लहरों से अलगाव
मंजिल का मकसद हो गया

तो 'अंदाज' कविता में –

मेरी खामोशी ने
न जाने कितने सवालों की
आबरू रख ली
दिल के रोने का एक अंदाज है खामोशी

'आदत' कविता में –

आदत लिपटी रहती है शरीर से
हटाऊं कैसे ?
अगर हटाऊं
तो जिऊं कैसे ?

'शुक्रिया ' कविता में वे कहती हैं-

जख्मों को मेरे पढ़कर
लोग मजा लेते हैं
जख्म दिए, उनका शुक्रिया
उन्होंने मुझे लिखना सीखा दिया।

ऐस ही अनेक अच्छी अच्छी कविताएं 'है कुछ और भी' नामक इस काव्यकृति में सुधा आचार्य जी ने बड़े मनोभाव से लिखकर पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास किया है। कविताओं का रसास्वादन तो पूरी पुस्तक पढ़कर ही लिया जा सकता है। आशा है इस पुस्तक का साहित्य जगत में उचित मुल्यांकन होगा और कवीयत्री सुधा जी आचार्य को और भी अच्छी-अच्छी कविताएं लिखने का प्रोत्साहन मिलेगा। वे शीघ्र ही अपना अगला काव्य संग्रह पाठकों तक पहुंचाएंगी। इसी आशा व विश्वास के साथ इस काव्य कृति पर सुधा जी को ढ़ेरों बधाईयां।

अफजल खां अफजल
वरिष्ठ साहित्यकार
जलचक्की, राजसमंद

बालिका शिक्षा ठीक नहीं

देश- दुनिया में भले ही महिलाओं का डंका बजने लगा है, राजसमंद में भी शैक्षिक, प्रशासनिक, राजनीतिक दृष्टि से महिलाओं की सहभागिता बढ़ने भी लगी, मगर भविष्य को लेकर बालिका शिक्षा की स्थिति भी अच्छी नहीं है। राजसमंद महिला मंच द्वारा वर्ष 1998 से महिला सशक्तिकरण के लिए महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक व राजनीतिक स्थिति में सुधार के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। ऐसे में राजसमंद जिले में बालिका शिक्षा की भौतिक स्थिति देखने पर चौंकाने वाले हालात है। महिला मंच द्वारा 2003 में राजसमन्द जन विकास संस्था का गठन किया और बाल विवाह, बालिका शिक्षा, महिला हिंसा व महिला स्वास्थ्य की दिशा में कार्य किए जा रहे हैं। सरकारी स्तर पर भी खूब प्रयास हो रहे हैं, मगर अब भी काफी कार्य करने की जरूरत है।

बाल विवाह और शिक्षा का चोली-दामन का साथ है। अगर किसी बच्ची का बाल विवाह होता है, तो उसकी शिक्षा बीच में ही रुक जाती है और वो शिक्षा से वंचित हो जाती है। वर्ष 1998 की बात करें तो जिले में एससीएएसटीण् ओबीसी व अल्पसंख्यक वर्ग की महिलाओं, किशोरियों की शैक्षिक स्थिति बहुत खराब थी। 15 प्रतिशत महिला पढ़ी लिखी थी, वो भी 5वीं से 8वीं तक, 10 वीं व कॉलेज में पढ़ने वाली महिलाओं व लड़कियों की संख्या नहीं के बराबर थी।

संस्था द्वारा वर्ष 1998 में क्षेत्र के रेलमगरा ब्लॉक से कार्य शुरू किया, जो 2000 तक चार ब्लॉक राजसमन्द, खमनोर, केलवाड़ा में फैल गया और महिलाएं जागरूक होकर आगे बढ़ने लगी महिलाएं संगठन संस्था से जुड़कर अपने बच्चो को आगे पढ़ाने लगी। हालांकि उन सभी महिलाओं को उनके परिवार के कड़े विरोध का सामना करना पडा, लेकिन संगठन की ताकत देखकर परिवार वालो ने धीरे-धीरे विरोध करना बंद किया। इस तरह संगठन व संस्था की कुछ आगे आने वाली महिलाओं ने हिम्मत दिखाकर अपने बच्चो के भविष्य के लिये शिक्षा के महत्व को समझा और उन्हें स्कूल, कॉलेज भेजना शुरू किया। इसके लिए संस्था ने गरीब व एकल महिलाओं के बच्चो को पढ़ने के लिए जिले की जेके इंडस्ट्री के डायरेक्टर आदरणीय सेठी साहब से भी आर्थिक सहयोग प्राप्त किया, जो वर्ष 1999 से वर्ष 2015 तक निरंतर प्राप्त हुआ और इसके द्वारा संगठन से जुड़ी गरीब, एकल व आगे आने वाली महिलाओं के बच्चो को शिक्षित करने के लिए 421 बच्चो का पहली कक्षा से लेकर कॉलेज तक की पढ़ाई में फीस व शैक्षिक सामग्री की राशि प्रदान की गयी थी। इस कारण गरीब, एकल व एससी, एसटी, ओबीसी के 421 किशोर व किशोरियों ने उच्च शिक्षा प्राप्त की और अब सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं में नौकरी कर आजीविका चला रही है। साथ ही बाल विवाह के तहत अब तक 3399 बाल विवाह रूक कर 3677 बच्चियों को शिक्षा से जोड़ा गया। हालांकि अब वर्ष 2010 से जिले में भी नामांकन का आंकड़ा बढ़ा है, लेकिन कोरोना जैसी महामारी आने के बाद वर्ष 2019 से 2021 तक बच्चों का विशेष कर लड़कियों का स्कूल से नामांकन कम हो गया। क्योंकि ज्यादातर परिवार के लोग स्कूल बंद होने के कारण लड़कियों का विवाह कराने लगे या काम पर भेजने लगे। देश या राज्य में कोरोना से पहले भी महिला शिक्षा की स्थति बहुत अच्छी नहीं थी। किशोरियों की शिक्षा को बाधित करने के अनेक सामजिक, आर्थिक व अन्य कई कारण रहे। फिर भी हमने महिला शिक्षा के लिए जितना कार्य करोना से पूर्व किया, वो करोना के बाद वापस निचले स्तर पर आ गया। एशिया में व भारत में कोरोना के बाद किशोरियों की शिक्षा को बहुत प्रभावित किया।

जो सर्वे आ रहे है, वो बच्चो के ड्रॉप आउट होने के आ रहे है। वर्ष 19-20 में हमारी संस्था एवं 11 राज्य की 11 संस्थाओं द्वारा 600 लड़कियों के साथ गूगल सर्वे किया गया, जिसमें 85 प्रतिशत लड़कियों ने स्कूल छोड़ने की बात कही। कोरोना से पहले हमने जो लड़कियों के साथ काम किया, वो भी स्थिति बिगड़ने लगी। क्योंकि

कोरोना से पहले जो पितृसत्तात्मक व्यवस्था बच्चियों को स्कुल जाने से रोक रही थी, वो और ज्यादा प्रभावी हो गई। उन लड़कियों पर घर के काम का अत्यधिक बोझ और बढ़ गया और परिवार वालो को लगा कि लड़किया जो की बोझ है या जिम्मेदारियां है, तो पहले उससे मुक्त होना जरुरी है और मुक्त होना मतलब उनकी शादी करना ही माना जाता है। हम जानते हैं कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था में परिवार के पास संसाधन कम होने जैसे आर्थिक, कमजोर स्थिति व गरीबी इत्यादी तो वो संसाधन का उपयोग बेटी से ज्यादा बेटो पर करना चाहते हैं। पितृसत्तात्मक सोच में महिलाओं को दोयम दर्जे में रखा जाता है। बेटियों पर परिवार ज्यादा खर्च नहीं करते हैं, वो उसे पराया धन समझते हैं। इस कारण भी किशोरियों की शिक्षा पर असर पड़ता है।

महिला शिक्षा को रोकने में सत्ता, पितृसत्ता, नियम तो पहले से ही हावी थे, लेकिन अब महामारी भी जुड़ गई थी। हम देखते हैं कि महिला शिक्षा से ही महिला सशक्तिकरण संभव है और सशक्तिकरण के लिए परिवार की भी बहुत बड़ी भूमिका है। उसके लिए पुरुष को भी साथ लेना जरूरी है। अगर पिता, पति, पुत्र या भाई महिला के प्रति जागरूक या सशक्त नहीं होंगे, तब तक हम लड़कियों की शिक्षा को आगे नहीं बढ़ा सकेंगे। इसलिए इन सभी को जागरूक व सशक्त करने पर ही बेटियों की शिक्षा की स्थिति में सुधार हो सकेगा। संस्था के कार्यक्रम में हम गांव से बेटियों के साथ उनके पिता को बुलाकर संवाद कराते हैं। हमे आश्चर्य होता है, जब किशोरियां बताती है कि वो पिताजी से ज्यादा बात नहीं करती है, वो डरती है, अपनी बात पिताजी से बात करने के लिए उनको एक घर में रहते हुए भी पिता से बात करने का अवसर नहीं मिलता। क्योंकि जब तक वो सवेरे उठती है, तब तक पिता काम पर चले जाते है और जब वो वापस आते हैं, तब तक वो सो जाती है।

इसी तरह जब हमने पत्र देकर किशोरियों के पिताजी को बुलाया तो वो सभी कार्यशाला में आए और जब लड़कियों ने अपने शिक्षा से संबंधित प्रश्न उनके सामने रखें, तो ज्यादातर किशोरियों के पिता ने कहा कि हमें तो पता ही नहीं की हमारी लड़की किस कक्षा में पढ़ रही है ? या क्या बनना चाहती है ? अगर वो पढ़ना चाहती है, तो हम पढ़ाएंगे और जो उसकी इच्छा या सपना है उसे पूरा करेंगे। आज वो बेटियां स्कूल, कॉलेज में जा रही है और शिक्षा ग्रहण कर रही है।

अगर हम में बालिका शिक्षा की स्थिति की बात करें, तो हमारे सामने निम्न समस्याएं आती है जो बालिका शिक्षा को प्रभावित करती है-

1. घर की रूकावटे और जिम्मेदारियां
2. असुरक्षा का खतरा
3. स्कुल दूर होना
4. गरीब होना
5. यातायात व्यवस्था का न होना
6. स्कूल में सेनेटरी पैड देने के लिए महिला टीचर का न होना
7. अलग से टॉयलेट का न होना
8. स्कूल में टीचर का न होना
9. मन पसंद विषय न मिलना
10. सरकारी योजनाओं की जानकारी
11. स्कूलों में शोचालय में पानी की व्यवस्था न होना
12. स्कूल में चार दीवारी का न होना

उपरोक्त सभी समस्याओं को दूर करने पर हमें तीन स्तर पर कार्य करने की जरूरत है, तभी हमारी बालिका उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकती है।

1. महिलाओं को निर्णय लेने में पितृसत्ता सोच बहुत हावी रहती है। चाहे वो परिवार हो, समाज हो या देश हो। वहा कहीं पर भी लड़कियों को निर्णय लेने में भागीदारी नहीं दी जाती है।
2. लडकियों को अपने अधिकारों की जानकारी देना है, ताकि वो अपनी बात रख सके।

परिवार की भूमिका

3. परिवार में उनके निर्णय को महत्वपूर्ण भूमिका मिले, लेकिन साथ में उनके सशक्त पिता, सशक्त भाई, सशक्त पति व् बेटे की जरूरत है, तभी महिला सशक्त होगी।

सरकार की भूमिका

3. सरकार जो कानून बनाती है, उसमे लड़कियों को सेंटर पर रख कर उनकी परिस्थितियों को ध्यान में रखकर कानून बनाना जरूरी है। उनसे जानकारी लेना जरूरी है। हालांकि हम ये भी जानते है कि सरकार ने बहुत सारी योजनाएं लागू की है, लेकिन उन नियम कानून को लागू करने में सरकार की ये कमी नजर आती है, तभी ये योजनाएं उन तक पहुंच नहीं पाती है।

शकुंतला पामेचा
संयोजिका
महिला मंच राजसमन्द

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 94142-39648

दोय गज़लां

(1)

गोरी थारो कठे छेवड़ो
छळक्यो जावे देख बेवड़ो
मन री वातां में न्हीं आणो
यो उत्पाती घणो केरड़ो
जो नेड़ो आवे आवा दो
जावे उणने परो रेवड़ो
देख वठीने भींतां टूटी
देख अठीने पड्यो लेवड़ो
वो मोफत री आंख्यां वाळी
दारू पी ने बण्यो बेवड़ो
तरस्या मरती बाळू बोली
देख्यो कोनी कदी मेवड़ो

(2)

जणा– जणा ने होरा कीदा
वणा उमर भर दोरा कीदा
नसबन्दी वाळा पूसेला
कतरा सोरी– सोरा कीदा
क्यूं मेलो थें होट बावजी
कतरा वांका मोरा कीदा
मन रे मइने बी तो झांको
घणा गालड़ा गोरा कीदा
अस्यो– कस्यो कर्यावर कीदो
लाडू फोरा– फोरा कीदा
फगत वणीरी मरजी चाले
डाकण मूठी– डोरा कीदा
सगला मल ने तुम्बी दीदी
जणा– जणा ने वोरा कीदा

डॉ. गोपाल राजगोपाल
आचार्य सामुदायिक चिकित्सा विभाग
एवं राजभाषा संपर्क अधिकारी
आरएनटी मेडिकल कॉलेज उदयपुर

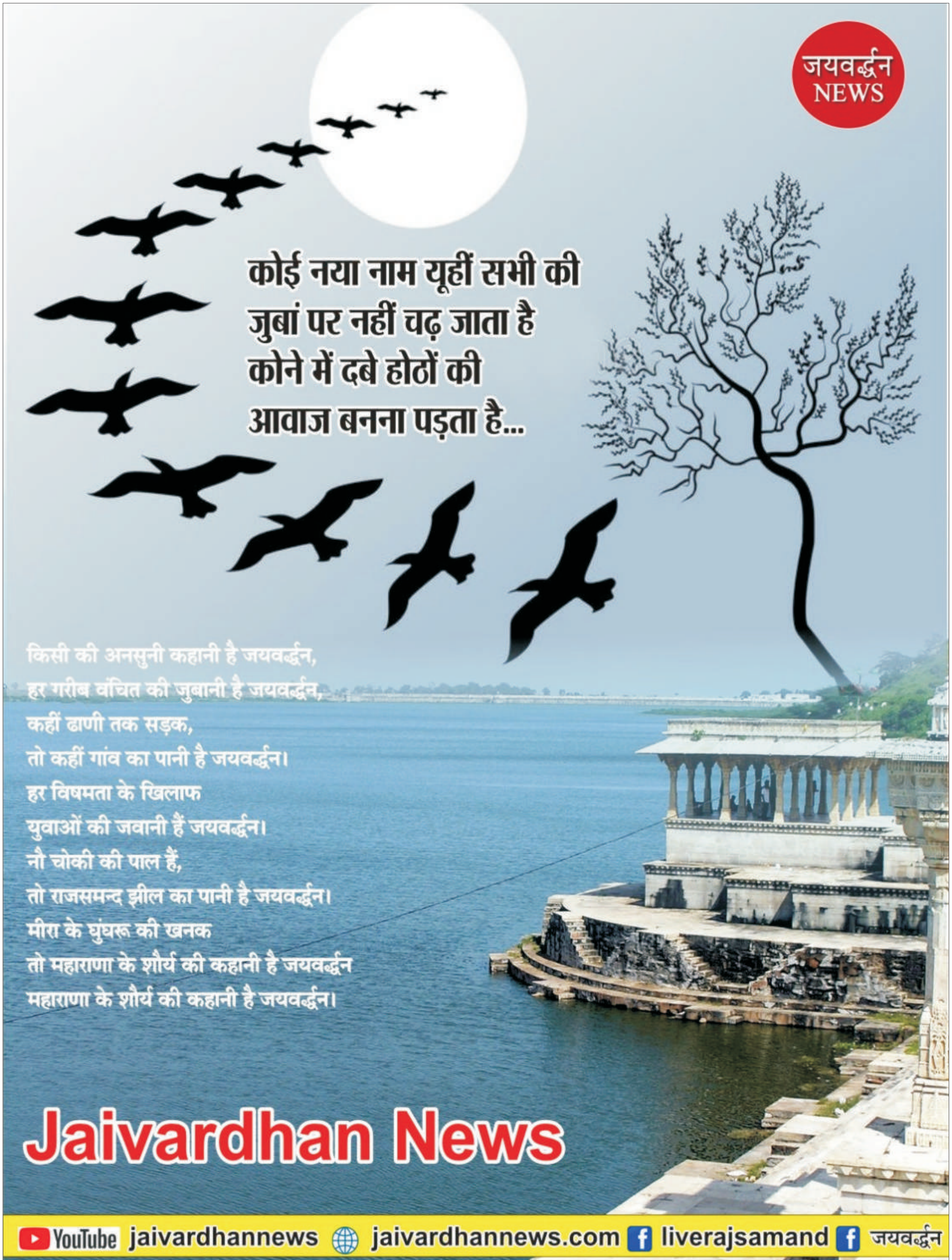

जयवर्द्धन NEWS
कोई नया नाम यूहीं सभी की
जुबां पर नहीं चढ़ जाता है
कोने में दबे होठों की
आवाज बनना पड़ता है...
किसी की अनसुनी कहानी है जयवर्द्धन,
हर गरीब वंचित की जुबानी है जयवर्द्धन,
कहीं ढाणी तक सड़क,
तो कहीं गांव का पानी है जयवर्द्धन।
हर विषमता के खिलाफ
युवाओं की जवानी हैं जयवर्द्धन।
नौ चोकी की पाल हैं,
तो राजसमन्द झील का पानी है जयवर्द्धन।
मीरा के घुंघरू की खनक
तो महाराणा के शौर्य की कहानी है जयवर्द्धन
महाराणा के शौर्य की कहानी है जयवर्द्धन।
Jaivardhan News
YouTube jaivardhannews jaivardhannews.com liverajsamand जयवर्द्धन

स्पीड ब्रेकर व खड्डे लाते हैं दुर्भाग्य और अनिष्ट

राष्ट्रीय राजमार्गों से लेकर गांव- कस्बों और शहरों तक की सड़कों पर पिछले कुछ वर्षों से स्पीड ब्रेकरों का चलन बेतहाशा बढ़ा है। गति को रोकने और दुर्घटनाओं को टालने से मकसद से बनाए गए स्पीड ब्रेकरों से दुर्घटनाओं पर कितनी रोक लग पाती है। यह अलग बात हैं, मगर यह भी सच है कि स्पीड ब्रेकरों की वजह से लोक जीवन में समृद्धि, खुशहाली और शान्ति के आगमन पर बुरा असर पड़ा है।

यों देखा जाए तो स्पीड़ ब्रेकरों से आस- पास की दुकानों और मकानों तथा क्षेत्र में परेशानियां पैदा हो जाती हैं। वास्तु के अनुसार शाश्वत प्रवाह को रोके जाने व्यक्ति के जीवन से लेकर घर- परिवार और पास- पड़ोस तक पर घातक असर पड़ता है।

जिन लोगों के घरों, दुकानों, प्रतिष्ठानों, दफ्तरों आदि के सामने या आस- पास स्पीड ब्रेकर बने हुए हैं। वे किसी न किसी परेशानी के दौर से गुजरते रहते हैं, क्योंकि वास्तु की सकारात्मक ऊर्जाओं से परिपूर्ण धाराओं का जो प्रवाह बेरोकटोक उनके घर- आंगन और दुकान, खेत- खलिहान या फॉर्म हाऊस सहजता और प्रवाहमयता के साथ आना चाहिए। उसमें स्थायी तौर पर बाधा उत्पन्न हो जाती है।

ऐसे में सुख- शांति और समृद्धि की कल्पना व्यर्थ है। जिनके आस- पास या सामने स्पीड ब्रेकर होते हैं, उनकी दुकान का न चलना, घर में किसी न किसी सदस्य के हमेशा बीमार रहने, नौकरी- धंधे में बरकत न होने, कुछ- कुछ दिन रुककर झगड़े, फसाद की स्थितियां सामने आने और कई तरह के अनिष्टों और आकस्मिक समस्याओं को देखा जा सकता है।

खूब सारी दुकानें ऐसी देखी गई हैं, जो स्पीड ब्रेकर बनने के बाद चलनी बंद हो जाती हैं या इनके संचालन में किसी न किसी प्रकार की बाधाएं आती रहती हैं। एक शोध अध्ययन में सामने आया है कि जिन लोगों की दुकानों और घरों के बाहर स्पीड ब्रेकर बने हैं, उनमें से नब्बे फीसदी लोग स्पीड ब्रेकर बनने के बाद से ही किसी न किसी परेशानी से त्रस्त हैं।

फिर जो स्पीड ब्रेकर बने हुए हैं, उनके आकार भी समरूप न होकर हर कहीं विचित्र और बेढ़ंगे हैं। जो भी राहगीर या वाहनधारी इन पर से होकर गुजरता है, उसकी आह व स्पीड ब्रेकर को लेकर की

जाती रहने वाली नकारात्मक टिप्पणियां भी इसके दुष्प्रभाव को बहुगुणित करने के लिए काफी है।

इस प्रकार रोजाना खूब सारे राहगीरों और वाहन चालकों द्वारा छोड़ी गई नकारात्मक अभिव्यक्ति का प्रभाव स्पीड ब्रेकर के इर्द-गिर्द अपना परिमाण बढ़ाने लगता है और इससे सकारात्मकता का ह्रास होते- होते एक स्थिति यह आ जाती है कि स्पीड ब्रेकर का समीपवर्ती पूरा परिवेश ही नकारात्मक ऊर्जा से भर उठता है।

इसका असर आस- पास के क्षेत्र पर बुरा प्रभाव छोड़ने लगता है। स्पीड ब्रेकर की वजह से उनके द्वार तक आने वाली समृद्धि व शांति की धाराएं रुक जाती हैं और यह स्थिति तब तक बरकरार रहती है, जब तक स्पीड ब्रेकर लगा रहेगा।

घर- दुकान के द्वार के सम्मुख पेड़, खंभा आदि को वास्तु में वेध मानते हुए दोष बताया गया है। इसी प्रकार स्पीड ब्रेकर भी दोष है। स्पीड ब्रेकर उनकी उन्नति में ब्रेक लगाने वाले होते हैं। दुर्भाग्य यह भी देखा गया है कि पिछले कुछ वर्ष से यातायात नियमों के प्रति जागरुकता एवं वाहनों के आवागमन में संयम बरतने की बजाय जगह- जगह स्पीड ब्रेकर बनाए जाने की मांग होती रही है। जैसे कि स्पीड ब्रेकर सामुदायिक विकास का ही कोई अंग या संरचना हो।

फिर जिस आकार- प्रकार में स्पीड ब्रेकरों का निर्माण हो रहा है, वे इतने बेढ़ंगे और कष्टदायी हैं कि इससे मानव जीवन पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है और शारीरिक कष्टों के साथ हड्डियों के रोगों में बढ़ोतरी देखी गई है। रीढ़ की हड्डी की समस्याएं सामने आयी हैं। यह स्थिति अपने आप में मानव समुदाय के लिए घातक है और कई दूसरी समस्याएं पैदा करने लगी है।

केवल स्पीड ब्रेकर ही नहीं, बल्कि अनावश्यक खड्डे भी सामान्य जीवन प्रवाह में बाधा उत्पन्न करते हैं और इनके कारण आस- पास या सामने रहने वाले लोगों के जीवन में कई प्रकार की परेशानियां उत्पन्न होती रहती हैं। इन गड्ढ़ों में पानी का जमाव बने रहने की स्थिति में और भी अधिक परेशानियां पैदा हो सकती हैं।

स्पीड ब्रेकर हों या गड्ढे, दोनों ही स्थितियां वास्तु दोष को इंगित करती हैं और इसका खामियाजा इनके आस- पास रहने वाले और क्षेत्रवासियों को भुगतना ही पड़ता है। इसे देखते हुए प्रयास यही करें कि इन दोनों ही स्थितियों से बचें, ताकि जीवन में सुख- समृद्धि और खुशहाली का प्रवाह निरन्तर हम तक पहुंचता रहे।

डॉ. दीपक आचार्य
ज्योतिषी एवं साहित्यकार
बांसवाड़ा

धरती के बेटे

अकाल का सबसे ज्यादा प्रभाव किसानों पर हुआ। बल्कि किसानों से भी ज्यादा उनके जानवरों पर। अनाज की व्यवस्था तो जैसे तैसे हो रही थी, मगर चारा तो ढूंढे नहीं मिलता था। रामप्रसाद की स्थिति फिर भी बेहतर थी। हर गर्मी हाड़तोड़ मेहनत करके उसने अपना कुआं काफी गहरा कर लिया था। फलस्वरूप आज उसकी दो बीघा जमीन पर हरे भरे गन्ने लहलहा रहे थे।

हमेशा की तरह आज भी वह मुर्गा बोलते ही उठा और खेत का चक्कर काटने निकल गया, लेकिन खेत पर जाते ही रामप्रसाद के पैरों तले की जमीन खिसक गई। कोई रातो- रात फसल काट कर गायब कर गया था।

रामप्रसाद दहाड़ मार कर रो पड़ा। उसके माथे का फेंटा दूर जा गिरा। हाथ की लाठी छूट गई और वह पागलों की तरह खेत में इधर से उधर दौड़ने लगा। एकाएक उसकी नजर आठ- दस गन्नों के एक झुरमुट पर पड़ी। वह और भी बौखला गया, हरामजादों, इतनी सी बानगी क्यों छोड़कर गए। इन्हें भी काटकर ले जाते। इनकी क्या मैं टीकी लगाऊं।

यह एक एक गन्ने को उखाड़ कर दूर फेंकने लगा, ले जाओ, भुखमरी, इनको भी ले जाओ। मैं तो और भी कमा लूंगा। अचानक कपड़े की एक पोटली देखकर उसके हाथ रुक गए। खोल कर देखा तो नोटों के बंडल साथ में एक पर्ची भी वह गांव की तरफ लपका और मास्टरजी को जगाया।

मास्टरजी, मास्टरजी यो कागद भणो तो। मास्टरजी ने कागज ले लिया और पढ़ने लगे। हमारे मवेशी भूख से मर रहे हैं। हमें यह बर्दास्त नहीं होता कि परिवार ज्यों पाले दोर यो तड़प- तड़प कर हमारे सामने ही अपनी जान दे दे। कहीं घास का तिनका मिलता नहीं। मजबूर हो आपका खेत लूटना पड़ा। ये तीन हजार रुपए छोड़ जाते हैं। घटेंगे तो सुकाल होने पर और पहुंचा देंगे। माफ करना! सुनते- सुनते रामप्रसाद की आँखें छलछला आई। मास्टरजी, वे चोर नहीं थे। के साथ किसान थे, धरती के बेटे।

माधव नागदा
वरिष्ठ कहानीकार
लाल मादड़ी, नाथद्वारा

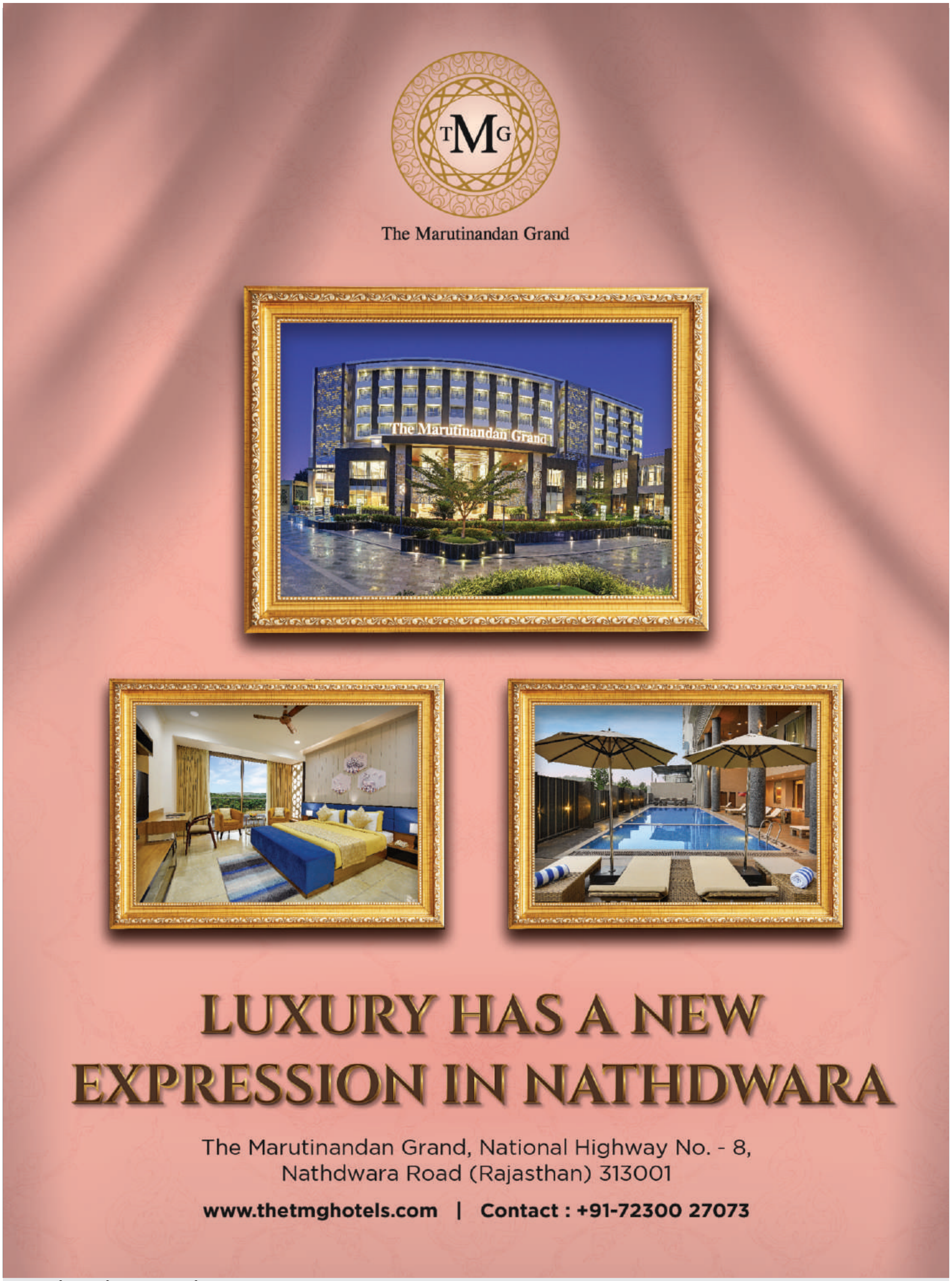
TMG
The Marutinandan Grand
The Marutinandan Grand
LUXURY HAS A NEW
EXPRESSION IN NATHDWARA
The Marutinandan Grand, National Highway No. - 8,
Nathdwara Road (Rajasthan) 313001
www.thetmghotels.com | Contact : +91-72300 27073

THE CREATIVE BRAIN ACADEMY
A BRAND OF QUALITY EDUCATION
C.B.A

AVAILABLE STREAMS

SCIENCE
PHYSICS,
CHEMISTRY,
BIOLOGY,
MATHEMATICS

COMMERCE
ACCOUNTANCY,
BUSINESS STUDIES,
ECONOMICS,
MATHEMATICS

ARTS
HISTORY
DRAWING
ECONOMICS
GEOGRAPHY
POLITICAL SCIENCE
SANSKRIT LITERATURE
ENGLISH LITERATURE
HINDI LITERATURE
COMPUTERS
& Many More Subjects

The Creative Brain Academy
(An ISO 9001:2015 Certified Brand Of Quality Education)

Vill - Maja, Opp. Helipad, Via - Jagan Marble Road,
Jambu Talab, Gunjol, Rajsamand
Ph. 9610710500 Ph. 9610710519

WITH OUR UNIQUE PLAN OF

SIP
SCHOOL INTEGRATED PROGRAMME

NOW PREPARE FOR
JEE
(FOUNDATION)
NEET
(FOUNDATION)
CUET
(FOUNDATION)
CA-FOUNDATION
CS-EET
STSE
NTSE
OLYMPIADS

जयवर्द्धन NEWS
जयवर्द्धन
कार्यालय पता : शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट, जेके मोड़ के पास
कांकरोली, जिला राजसमंद, 94142-39648, 96729-80901

To

YouTube jaivardhannews jaivardhannews.com liverajsamand जयवर्द्धन